Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

إِنَّ اللّٰهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ
حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِأَنْفُسِهِمْ ؕ
وَإِذَآ أَرَادَ اللّٰهُ بِقَوْمٍ سُوْٓءًا فَلَا مَرَدَّ لَهٗ ۚ
وَمَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّالٍ ⑪

(सूरः रअद : 12)

अनुवाद : वास्तव में, अल्लाह किसी कौम की स्थिति को तब तक नहीं बदलता जब तक कि वे स्वयं अपने जीवन में जो कुछ भी हो नहीं बदलते हैं, और जब अल्लाह किसी कौम के बुरे अंत का फैसला करता है, तो इसे किसी भी मामले में टालना संभव नहीं है, और उसके अतिरिक्त कोई सहायक नहीं है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 9
अंक - 27-29

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद
अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन
फ़रीद

11 मोहर्रम , 1445 हिज्री कमरी, 18 वफ़ा 1403 हिज्री शम्सी, 4-18 जुलाई 2024 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

ख़ुत्बः जुमअः

हज़रत ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपनी शहादत के वक़्त दुआ की कि हे अल्लाह यहां कोई ऐसा नहीं जो उस वक़्त तेरे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तक मेरा सलाम पहुंचा दे इसलिए हे ख़ुदा तू ख़ुद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मेरा सलाम पहुंचा दे और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बता दे जो यहां हमारे साथ हो रहा है

हज़रत ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हो पहले सहाबी थे जिनको लकड़ी पर बांध कर शहीद किया गया

हज़रत ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हो पहले थे जिन्हों ने क़तल से पहले दो रकातें पढ़ने की सुन्नत क़ायम की थी

ये वे लोग थे जो अल्लाह तआला से प्यार करने वाले और अल्लाह की ख़ातिर क़ुर्बानियां करने वाले थे और अल्लाह तआला भी उनकी क़दर करता था और फिर मरने के बाद भी उनकी नाशों को सुरक्षित रखा

हज़रत ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हो की शहादत के वाक़िया का ईमान अफ़रोज़ वर्णन और फ़लस्तीन, सूडान तथा यमनी और पाकिस्तानी अहमदियों के लिए दुआ की तहरीक

श्रीमान चौधरी मुनीर अहमद साहिब (मुरब्बी सिल्सिला अमेरिका) डायरेक्टर मसरूर टैली पोर्ट (एम. टी.ए.) इंटरनैशनल अमेरिका) और श्रीमान अब्दुल्-रहमान कटी साहिब आफ़ अला नूर केराला की विशेषताओं का वर्णन और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 31 मई 2024 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

एक सरिया के वर्णन में हज़रत ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हो के शहीद किए जाने का वर्णन हो रहा था इसकी मज़ीद तफ़सील में यह लिखा है कि यह पहले सहाबी थे जिनको लकड़ी पर बांध कर शहीद किया गया। अर्थात सलीब की तरह लटका कर शहीद किया गया। अल्लामा इब्ने इसीर जुज़री लिखते हैं कि हज़रत ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हो पहले सहाबी थे जो अल्लाह तआला की ख़ातिर सलीब दिए गए

(ओसोदुल गाबा भाग 2 पृष्ठ 156 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2003 ई.)

एक रिवायत में है कि क़ुरैश ने हज़रत ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हो से कहा कि अगर तुम इस्लाम से रुजू कर लो तो हम तुम्हारा रास्ता छोड़ देंगे लेकिन अगर तुमने रुजू नहीं किया तो हम तुम्हें क़तल कर देंगे। हज़रत ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा अल्लाह के रास्ते में मेरा क़तल तो एक मामूली बात है। फिर गोया हुए : हे अल्लाह यहां कोई ऐसा नहीं जो उस वक़्त तेरे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तक मेरा सलाम पहुंचा दे इसलिए हे ख़ुदा तू ख़ुद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मेरा सलाम पहुंचा दे और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बता दे जो यहां हमारे साथ हो रहा है।

(सीरत हल्बिया भाग 3 पृष्ठ 235 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

हज़रत उसामा बिन ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि एक रोज़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ बैठे हुए थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर वह कैफ़ीयत तारी हुई जो वह्यी नाज़िल होने के वक़्त तारी हुआ करती थी। हमने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फ़रमाते हुए सुना وَعَلَيْهِ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ अर्थात

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

इस पर भी सलामती और अल्लाह की रहमतें और बरकतें हों। फिर जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर से वह्यी के आसार हुए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : यह जिब्राईल थे वह मुझे ख़ुबैब का सलाम पहुंचा रहे थे। ख़ुबैब को क़ुरैश ने क़तल कर दिया।

रिवायत है कि क़ुरैश ने ऐसे चालीस आदमियों को हज़रत ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हो के क़तल के वक़्त बुलाया जिनके बाप दादा जंग-ए-बदर में क़तल हुए थे। फिर क़ुरैश के उन लोगों में से हर एक को एक-एक नेज़ा देकर कहा कि यही वह व्यक्ति है जिसने तुम्हारे बाप दादा को क़तल किया था।

(सीरत हल्बिया भाग 3 पृष्ठ 236 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

तो उन लोगों ने ख़ुबैब को अपने नेज़ों के साथ हल्की-हल्की ज़रबें लगाएं इस पर हज़रत ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हो सलीब पर बेचैन होने लगे। फिर ख़ुबैब पलटे तो उनका चेहरा काअबा की तरफ़ हो गया। उन्होंने कहा

समस्त तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जिसने मेरे चेहरे को अपने क़िबला की जानिब कर लिया जो उसने अपने लिए पसंद किया है।

फिर मुशरेकीन ने ख़ुबैब को क़तल कर दिया।

(सब्लुल् हुदा भाग 6 पृष्ठ 44 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

इस से मालूम होता है कि मुशरेकीन ने पहले हज़रत ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हो को नेज़े चुभोए, शदीद अज़ीयत दी और फिर क़तल किया। जबकि बुख़ारी की एक रिवायत से मालूम होता है कि हज़रत ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हो ने जब अपने अशआर ख़त्म किए तो उक्बा बिन हारिस उनके पास आया और उसने हज़रत ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हो को क़तल कर दिया।

(सही बुख़ारी किताब अल्-मग़ाज़ी बाब غزوة الرجيع... हदीस : 4086)

उक्बा बिन हारिस की कुनिय्यत अबू सिरवा वर्णन हुई है।और कुछ रिवायात में वर्णन है कि अबू सिरवा उक़बा बिन हारिस उस वक़्त छोटा था। उसके हाथ में नेज़ा दिया गया परंतु वारा अबू मेस्रा अबदरी ने किया। अर्थात बच्चे के हाथ में बदला लेने के लिए नेज़ा पकड़ाया लेकिन उस पर ज़ोर दूसरे बड़े आदमी ने लगाया। कुछ उल्मा ने अबू सरवा अलग नाम वर्णन किया है और उक़बा बिन हारिस को इसका भाई लिखा है। जब अबू मयसरा ने वार किया तो कारगर साबित नहीं हुआ जिस पर अबू सरवा ने आगे बढ़कर नेज़े से काम खतम कर दिया। बाद में उक़बा बिन हारिस ने जो कि फ़तह मक्का के वक़्त इस्लाम ले आए थे उन्होंने वर्णन किया कि मैं अभी छोटा था और अबू मयसरा अबदरी ने मेरे हाथ में बरछी या नेज़ा दिया और ख़ुद मेरे हाथ के द्वारा से ख़ुबैब को मारा।

(दायरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भाग 7 पृष्ठ 148-149 मतबूआ बज़म-ए-इक़बाल लाहौर)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस के बारे में लिखा है कि "क़ुरैश के सरदारों की हृदय की दुश्मनी के सामने रहम और इंसाफ की भावना ख़ारिज अज़ सवाल था। इसलिए अभी ज़्यादा दिन नहीं गुज़रे थे कि बनू अल् हारिस के लोग और दूसरे क़ुरैश कर सरदार ख़ुबैब को क़तल करने और इस के क़तल पर जश्न मनाने के लिए उसे एक खुले मैदान में ले गए। ख़ुबैब ने शहादत की बू पाई तो क़ुरैश से इल्हा के साथ कहा कि मरने से पहले मुझे दो रकात नमाज़ पढ़ लेने दो। क़ुरैश ने जो ग़ालिबन इस्लामी नमाज़ के मंज़र को भी इस तमाशा का हिस्सा बनाना चाहते थे इजाज़त दे दी और ख़ुबैब ने बड़ी तवज्जा और हुज़ूर-ए-क़लब के साथ दो रकात नमाज़ अदा की और फिर नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर क़ुरैश से कहा कि :

"मेरा दिल चाहता था कि मैं अपनी नमाज़ को और लंबा करूँ, लेकिन फिर मुझे यह ख़्याल आया कि कहीं तुम लोग यह न समझो कि मैं मौत को पीछे डालने के लिए नमाज़ को लंबा कर रहा हूँ।"

और फिर ख़ुबैब यह कविता पढ़ते हुए आगे झुक गए

وَمَا اَنْ اُبَالِیْ حِیْنَ اُقْتَلُ مُسْلِمًا عَلٰی اَیِّ شِقٍّ کَانَ لِلّٰہِ مَصْرَعِیْ
وَذٰلِکَ فِیْ ذَاتِ الْاِلٰہِ وَاِنْ یَّشَاْ یُبَارِکْ عَلٰی اَوْصَالِ شِلْوٍ مُمَزَّعٍ

अर्थात "जबकि में इस्लाम की राह में और मुस्लमान होने की हालत में क़तल किया जा रहा हूँ तो मुझे यह परवाह नहीं है कि मैं किस पहलू पर क़तल हो कर गिरूँ। यह सब कुछ ख़ुदा के लिए है और अगर मेरा ख़ुदा चाहेगा तो मेरे जिस्म के पारापारा टुकड़ों पर बरकात नाज़िल फ़रमाए गा शायद अभी ख़ुबैब की ज़बान पर अशआर के आख़िरी शब्द गूंज ही रहे थे कि उक़बा बिन हारिस ने आगे बढ़कर वार किया और यह आशिक़-ए-रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ाक पर था। दूसरी रिवायत में यह है कि क़ुरैश ने ख़ुबैब को एक दरख़्त की शाख़ से लटका दिया था और फिर नेज़ों की चोकें दे दे कर क़तल किया।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो एम.ए पृष्ठ : 515)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु इस बारे में वर्णन करते हैं कि "जब उनके क़तल का वक़्त आ पहुंचा तो ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि मुझे दो रकात नमाज़ पढ़ लेने दो। क़ुरैश ने उनकी यह बात मान ली और ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हो ने सब के सामने इस दुनिया में आख़िरी बार अपने अल्लाह की इबादत की। जब वह नमाज़ ख़त्म कर चुके तो उन्होंने कहा मैं अपनी नमाज़ जारी रखना चाहता था परंतु इस ख़्याल से ख़त्म कर दी है कि कहीं तुम यह न समझो कि मैं मरने से डरता हूँ।

फिर आराम से अपना सिर क़ातिल के सामने रख दिया और ऐसा करते हुए ये अशआर पढ़े :

وَلَسْتُ اُبَالِیْ حِیْنَ اُقْتَلُ مُسْلِمًا عَلٰی اَیِّ جَنْبٍ کَانَ لِلّٰہِ مَصْرَعِیْ
وَذٰلِکَ فِیْ ذَاتِ الْاِلٰہِ وَاِنْ یَّشَاْ یُبَارِکْ عَلٰی اَوْصَالِ شِلْوٍ مُمَزَّعٍ

अर्थात जबकि मैं मुस्लमान होने की हालत में क़तल किया जा रहा हूँ तो मुझे परवाह नहीं है कि मैं किस पहलू पर क़तल हो कर गिरूँ। ये सब कुछ ख़ुदा के लिए है और अगर मेरा ख़ुदा चाहेगा तो मेरे जिस्म के पारापारा टुकड़ों पर बरकात नाज़िल फ़रमाएगा। ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हो ने अभी ये शेअर ख़त्म नहीं किए थे कि जल्लाद की तलवार उनकी गर्दन पर पड़ी और उनका सिर मिट्टी पर आ गिरा।"

(दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन, अनवारुल उलूम भाग 20 पृष्ठ 262)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि हज़रत ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हो पहले थे जिन्हों ने क़तल से पहले दो रकातें पढ़ने की सुन्नत क़ायम की थी।

(सही बुख़ारी किताबुल् मग़ाज़ी बाब ग़ज़वा अल् रजीह हदीस 4086)

हज़रत ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हो की दुआ थी मुख़ालेफ़ीन के बारे में और इस दुआ के नतीजा में उनका अंजाम क्या हुआ।

इस बारे में अल्लामा इब्ने हिज्र असकलानी जो बुख़ारी के शारह हैं वह सरिया रजी के तहत एक हदीस की शरह में लिखते हैं कि ख़ुबैब ने शहादत के वक़्त यह दुआ मांगी कि اَللّٰھُمَّ اَحْصِھِمْ عَدَدًا। कि हे अल्लाह इन दुश्मनों की गिनती को शुमार कर रख। यह जो मेरे दुश्मन हैं उनकी गिनती कर लेता कि उनसे बदला ले सकूँ और एक दूसरी रिवायत में यह अल्फ़ाज़ अधिक हैं कि وَاقْتُلْھُمْ بَدَدًا وَلَا تُبْقِ مِنْھُمْ اَحَدًا और उन्हें चुन-चुन कर क़तल कर और उनमें से किसी एक को भी बाक़ी नहीं छोड़।

जब हज़रत ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हो कतल किए जाने के लिए तख़्ता पर चढ़े तो उस वक़्त उन्होंने यह दुआ की थी। एक मुशरिक ने जब यह दुआ सुनी कि اَللّٰھُمَّ اَحْصِھِمْ عَدَدًا وَاقْتُلْھُمْ بَدَدًا। अर्थात हे अल्लाह उनकी गिनती को शुमार कर रख और उनको चुन चुन कर क़तल कर तो वह ख़ौफ़ से ज़मीन पर लेट गया। कहते हैं कि अभी एक वर्ष नहीं गुज़रा था कि सिवाए उसके जो ज़मीन पर लेट गया हज़रत ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हो के क़तल में सम्मिलित समस्त लोग ज़िंदा न रहे और सब ख़त्म हो गए।

(फ़तह अल् बारी शरह सही अल् बुख़ारी भाग 7 पृष्ठ 443 दारुल अर्यान लिल् तुर्रास अल् काहर 1986 ई.)

बहरहाल यह तो कहीं भी बाक़ी जगहों से साबित नहीं है कि एक वर्ष अभी ख़त्म नहीं हुआ था कि सब लोग ख़त्म हो गए। हाँ यह कहा जा सकता है कि उनमें से अक्सरियत मारी गई। या तो मारे गए या फ़तह मक्का तक क़रीबन सारे ही इस्लाम आए और यूं हज़रत ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हो की दुआ पूरी शान से पूरी हुई कि कुछ तो जहन्नुम रसीद हुए और बाक़ी लोगों को इस्लाम की हिदायत नसीब हुई।

एक सीरत निगार इस हवाले से लिखता है कि मुशरेकीन ख़ुबैब की ज़बान से ये कलिमात सुन कर काँप उठे। उन्हें यक़ीन था कि ख़ुबैब की यह बद्दुआ रायगां नहीं जाएगी। हारिस बिन बरसा वहां मौजूद थे। वह अभी मुस्लमान नहीं हुए थे।

उनका कहना है कि ख़ुबैब की बद्दुआ सुनते ही मुझे यक़ीन हो गया कि अब यह बद्दुआ उनमें से किसी को भी ज़िंदा नहीं छोड़ेगी। यही वजह है कि यह बद्दुआ सुनकर वहां मौजूद काफ़िरों और मुशरिकों में से कुछ लोग कानों में उंगलियां ठोंस कर फ़रार हो गए, कुछ लोगों के पीछे छपने लगे, अर्थात बद्दुआ के असर से बचने के लिए अपने रिवाज के अनुसार एक दूसरे के पीछे छुपने लग गए, कुछ दरख़्तों की ओट में हो गए और कुछ ज़मीन पर लेट गए। उनका ख़्याल था कि इस तरह हम इस बद्दुआ से सुरक्षित रहेंगे। उनके हाँ रिवायती तौर पर यह बात मशहूर थी कि अगर किसी आदमी के लिए बद्दुआ की जाए और वह पहलू के बल लेट जाए तो इस बद्दुआ का असर ख़त्म हो जाता है।

हज़रत मुआवीया बिन अबूसुफ़ियान रज़ियल्लाहु अन्हो अपने और अपने वालिद के इस्लाम स्वीकार करने से पहले का वाक़िया वर्णन करते हैं कि दूसरे लोगों की तरह में भी अपने वालिद के साथ इस जगह पहुंचा था। मैं ने देखा कि मेरे वालिद ख़ुबैब की बद्दुआ से घबरा गए। उन्होंने मुझे लुटाने के लिए बहुत ज़ोर से ज़मीन की तरफ़ घसीटा। मैं पीठ के बल गिरा। गिरने की वजह से मुझे इतनी ज़बरदस्त चोट लगी कि मैं बड़ी मुद्दत तक उसकी तकलीफ़ महसूस करता रहा।

होवैतिब बिन अब्दुल उज़्ज़ा फ़तह मक्का वाले वर्ष मुस्लमान हुए थे। वह कहते हैं कि हज़रत ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हो की बद्दुआ सुनते ही मैं ने तुरंत कानों में उंगलियां ठोंस लीं और भाग निकला। मैं डर रहा था कि मबादा उनकी बद्दुआ की आवाज़ मेरे कानों के तआक़ुब में आ जाए। हकीम बिन हिज़ाम वर्णन करते हैं कि मैं हज़रत ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हो की बद्दुआ से डर कर दरख़्तों के पीछे छिप गया। ज़ुबैर बिन मुतइम कहते हैं कि मैं इस दिन हज़रत ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हो की बद्दुआ का सामना करने का हौसला नहीं कर सका। मैं ने ख़ौफ़ज़दा हो कर लोगों की आड़ ले ली। नौफ़ल बिन मुआविया दीली फ़तह मक्का के अवसर पर मुस्लमान हुए। वह कहते हैं कि इस दिन मैं ख़ुबैब की बद्दुआ के वक़्त मौजूद था। मुझे यह पूरा यक़ीन था कि उनकी बद्दुआ से वहां मौजूद लोगों में से कोई भी ज़िंदा नहीं बचेगा। मैं खड़ा हुआ था, उनकी बद्दुआ से घबरा गया और ज़मीन की तरफ़ झुक गया।

क़ुरैश के लोगों में इस बद्दुआ का बहुत चर्चा रहा। एक महीने या इस से ज़्यादा समय तक उनकी मज्लिसों में ख़ुबैब की बद्दुआ का ख़ौफ़ मंडलाता रहा और वह इस पर तरह-तरह के तबसरे करते रहे।

(सीरत इनसाइक्लोपीडिया भाग 6 पृष्ठ 470-471मक्तबा दारुस स्सलाम रियाज़ 1434 हि)

एक और रिवायत में है कि "इस मजमा में एक व्यक्ति सईद बिन आमिर भी सम्मिलित था। यह व्यक्ति बाद में मुस्लमान हो गया और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माना ख़िलाफ़त तक उसका यह हाल था कि जब कभी उसे हज़रत ख़ुबैब का वाक़िया याद आता था तो इस पर ग़शी की हालत तारी हो जाती थी।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो एम.ए पृष्ठ 515 से 516)

सईद बिन आमिर जिनका अभी वर्णन हुआ है उनके बारे में यह मिलता है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने अह्द-ए-ख़िलाफ़त में शाम देश में उन्हें एक जगह आमिल निर्धारित फ़रमाया था। और बाज़-औक़ात उन्हीं लोगों के दरमयान ही अचानक ग़शी का दौरा पड़ जाया करता था। लोगों ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से शिकायत की कि यह बीमार व्यक्ति है जिसको आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने हम पर मुक़र्रर फ़र्मा दिया है। एक मर्तबा जब वह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से मिलने आए तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनसे पूछा कि हे सईद! तुम्हें कोई बीमारी लाहक़ है? इस पर वह अर्ज़ करने लगा कि :

हे अमीर-ऊल-मोमेनीन मुझे किसी किस्म की कोई बीमारी नहीं है। बात केवल इतनी है कि हज़रत ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हो को जिस वक़्त क़त्ल किया जा रहा था तो वहां मौजूद लोगों में मैं भी शामिल था। और अब जब मुझे हज़रत ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हो की वह बद्दुआ याद आ जाती है तो ख़ौफ़ के मारे मुझ पर ग़शी तारी हो जाती है।

(अल् सीरतुल नब्वी लेइब्ने हशिम, ذکر یوم الرجیع فی سنۃ ثلاث, भाग 2 पृष्ठ 150 दारुल मारूफ़ बेरूत 2000 ई.)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हज़रत ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हो की नाश को सूली से उतारने के लिए एक पार्टी को रवाना फ़रमाने बारे में यह वर्णन मिलता है :

रिवायत में वर्णन हुआ है कि क़ुरैश ने सूली की हिफ़ाज़त के लिए चालीस आदमी निर्धरित किए थे ताकि वह लाश वहीं लटकी रहे और वहीं ख़राब हो जाए-गल सड़ जाए या बाद में योह अपना बदला लेते रहीं। बहरहाल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत मिकदाद रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम रज़ियल्लाहु अन्हो को मक्का की तरफ़ रवाना किया ताकि वह हज़रत ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हो की लाश को सूली से उतारें। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस की ख़बर हो गई थी। अल्लाह तआला ने शायद इलम दे दिया हो। बहरहाल एक रिवायत के अनुसार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रम\या : तुम में से कौन है जो ख़ुबैब को सूली से उतारेगा तो उसके लिए जन्नत होगी। हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया : हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मैं और मेरा साथी मिक़दाद बिन अस्वद यह काम कर लेंगे। जब यह दोनों उस जगह पहुंचे जहां हज़रत ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हो की नाश थी तो उन्होंने वहां चालीस आदमियों को पाया लेकिन वे सब के सब मदहोश सोए हुए थे। इन दोनों ने ख़ुबैब को उतार लिया और ये हज़रत ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हो की शहादत के चालीस रोज़ बाद का वाक़िया है। हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हो की लाश को अपने घोड़े पर रख लिया और वे दोनों चले। यहां तक कि जब कुफ़्फ़ार को ख़बर हुई और उन्होंने हज़रत ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हो को ग़म की हालत में पाया तो उन्होंने क़ुरैश को इस की ख़बर दी जिस पर उनमें से सत्तर सवार निकले। ओर लोग भी शामिल किए ताकि पीछा करें। फिर जब क़ुरैश के लोग इन दोनों सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के क़रीब पहुंचे तो हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हो की लाश को ज़मीन पर रखा और हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने सिर से अपना इमामा खोल दिया और उनसे कहा मैं ज़ुबैर बिन अवाम हूँ और यह मेरा साथी मिक़दाद बिन अस्वद है हम दोनों ऐसे बब्बर शेर हैं जिन्होंने अपने बच्चों को पीछे छोड़ा है। अगर तुम लोग चाहो तो हम तीरों से तुम्हारा स्वागत करें और चाहो तो तुम पर आ पढ़ें और अगर तुम लोग चाहो तो यहीं से लौट जाओ। यह सुनकर वे मुशरेकीन वापस चले गए और इसके बाद जब हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु ने देखा कि हज़रत ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हो की लाश ग़ायब थी जैसे ज़मीन उन्हीं निगल गई हो जिस पर आप रज़ियल्लाहु अन्हो का नाम बलीउल अर्ज़ प्रसिद्ध हो गया अर्थात वह व्यक्ति जिसको ज़मीन निगल गई हो।

लाश ग़ायब होने के विषय में इस तरह की रिवायात हैं जो अजीब लगती हैं। जबकि एक रिवायत है जो आगे वर्णन करूँगा, वह सही लगती है कि किस तरह लाश ग़ायब हुई। बहरहाल हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत मिक्दाद रज़ियल्लाहु अन्हो पर फ़रिश्तों के फ़ख़र के बारे में लिखा है कि इसके बाद हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत मिकदाद रज़ियल्लाहु अन्हो मदीना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास पहुंचे तो उस वक़्त आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास जिब्राईल थे। जिब्राईल ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से फ़रमाया : हे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आप के सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो में से उन दो आदमियों पर फ़रिश्ते भी गर्व करते हैं।

(सीरत हल्बिया भाग 3 पृष्ठ 236 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

(तारीख़ अल् ख़मीस भाग 2 पृष्ठ 254 दारुल कुतुब इल्मिया 2009 ई.)

सीरत की किताबों में हज़रत ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हो की नाश लाने के लिए एक और पार्टी की रवानगी का भी वर्णन मिलता है। इसलिए एक रिवायत के अनुसार आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो बिन अमय को तन्हा बतौर क़ुरैश के जासूस की तरफ़ भेजा। उन्होंने वर्णन किया मैं हज़रत ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हो की सलीब के पास आया। मैं जासूसों से डर रहा था। मैं सलीब पर चढ़ा। मैं ने हज़रत ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हो की नाश को खोला तो वह ज़मीन पर आ गई। मैं कुछ देर किनारा-कश रहा। मैं ने अपने पीछे आवाज़ सुनी। मैं ने देखा तो मैं ने वहां हज़रत ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हो की नाश को नहीं पाया गोया कि ज़मीन ने उन्हें निगल लिया। आज तक उनका कोई

निशान नहीं मिला।

(सब्लुल् हुदा वल् रिशाद भाग 6 पृष्ठ 45 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

इस में भी मुबालग़ा लगता है। बहरहाल इस तरह की रिवायात तारीख़ में लिखी हुई हैं

एक दूसरी रिवायत के अनुसार हज़रत अम्र बिन अमय ज़रमी रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ हज़रत जब्बार बिन सख़्रा अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हो को भी भेजा गया था। हज़रत ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हो की नाश की निगरानी करने वाले क़ुरैशियों ने जब इन दोनों का पीछा किया तो हज़रत जब्बार रज़ियल्लाहु अन्हो ने लाश को नदी में फेंक दिया और इस तरह अल्लाह तआला ने ख़ुबैब की नाश को काफ़िरों से ग़ायब कर दिया।

(अल् सीरतुल नब्वी लेइब्ने हशशाम पृष्ठ 885 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.)

बहरहाल जैसा कि मैं ने कहा था कि उसकी अलग अलग रिवायात हैं।

यह रिवायत है जो ज़्यादा सही लगती है कि जब वह पीछे दौड़े तो उन्होंने अर्थात हज़रत जब्बार रज़ियल्लाहु अन्हु ने नाश को दरिया में फेंक दिया और दरिया उस नाश को बहा कर ले गया।

और यह होता है कि दरिया का तेज़ पानी लाशों को बहा कर ले जाता है। तो इस बारे में अलग अलग रिवायात आती हैं। बहरहाल उनकी लाश काफ़िरों के हाथ नहीं लगी और यही कहते हैं कि ज़मीन निगल गई, ग़ायब हो गई। इसी नाम से अर्थात बलीउल् अर्ज़ के नाम से फिर यह मशहूर हो गए थे कि उनकी नाश ज़मीन में ग़ायब हो गई। वे कुफ़्फ़ार तो जो कुछ करना चाहते थे वह नहीं कर सके और इस तरह नाश को अल्लाह तआला ने बेहुरमती से सुरक्षित रखा।

अल्लाह तआला इस तरह भी अपने प्यारों की हिफ़ाज़त करता था। बहुत से ऐसे अवसर हैं जहां नाशों को सुरक्षित रखा।

पिछली दफ़ा मैं ने एक वाक़िया सुनाया था भिड़ों और शहद की मक्खियों के द्वारा से नाश को सुरक्षित रखा। बेहुरमती नहीं हो सकी।

(अल् तबकातुल् कुब्रा भाग 3 पृष्ठ 353 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1990 ई.)

बहरहाल ये वे लोग थे जो अल्लाह तआला से प्यार करने वाले और अल्लाह की ख़ातिर क़ुर्बानियां करने वाले थे और अल्लाह तआला भी उनकी क़दर करता था और फिर मरने के बाद भी उनकी नाशों को सुरक्षित रखा।

इस सरिया का वर्णन यहां ख़त्म हुआ दुआ की तरफ़ मैं तवज्जा दिलाता रहता हूँ। फ़लस्तीनियों के लिए विशेषतः दुआ करें

अब तो इंतेहा हो गई है। रफा के बारे में पहले यह था कि अमरीका कहता था कि यह हमारी रैड लाईन होगी और अब कहते हैं कि नहीं अभी नहीं ख़त्म हुई। उनकी रैड लाईन का मयार पता नहीं क्या है? कितने लाख लोगों को मारना है उन्होंने फिर उन में कोई हिल जुल् पैदा होगी।

अल्लाह तआला उन ज़ालिमों से दुनिया को निजात दे और मासूम फ़लस्तीनियों को भी निजात दे।

इसी तरह सूडान के लोगों के लिए दुआ करें।

वहां तो ख़ुद अपनी क़ौम के लोग अपनी क़ौम के लोगों को मार रहे हैं। मुस्लमान मुस्लमानों को मार रहे हैं। अल्लाह तआला उनको भी अक़्ल दे और ये अल्लाह तआला की पकड़ से बचने वाले हों और अल्लाह तआला के जो अहकामात हैं, ये मुस्लमान कहलाते हुए फिर उन पर अमल करने वाले भी हों।

यमन के असीरान के लिए दुआ करें। अल्लाह तआला उनकी रिहाई के सामान पैदा फ़रमाए।

पाकिस्तान के अहमदियों के लिए दुआ करें। वहां भी हालात ऊपर नीचे होते रहते हैं और अब जबकि ईद क़रीब आ रही है तो मौलवी इन दिनों में मज़ीद सरगर्म हो जाते हैं। अल्लाह तआला हर अहमदी को हर शर से सुरक्षित रखे। असीरान की रिहाई के भी जल्द सामान पैदा फ़रमाए।

अब मैं जुमा के बाद नमाज़ जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊंगा। पहला हमारे एक मुरब्बी सिल्सिला चौधरी मुनीर अहमद साहिब

का है जो एम. टी.ए. इंटरनैशनल टैली पोर्ट अमरीका के डायरेक्टर थे। पिछले दिनों (73) वर्ष की आयु में उनकी वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनके ख़ानदान में अहमदियत उनके पड़नाना हज़रत मौलवी फ़ज़्लुदीन साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो के द्वारा से आई जिनका नाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के तीन सौ तेराह सहाबा की फ़हरिस्त में दूसरे नंबर पर है। चौधरी मुनीर साहिब ने 1978 ई. में जामिआ अहमदिया से शाहिद का इमतेहान पास किया। फिर पाकिस्तान में अलग-अलग जगहों पर मुरब्बी की हैसियत से ख़िदमत की। फिर मोतमिद मजलिस ख़ुद्दामुल् अहमदिया मर्कज़िया के तौर पर ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। 81 ई. में अमरीका भिजवाए गए। 90 ई. तक वहां रहे। फिर उस के बाद वापस आ गए। फिर 94 ई. में दुबारा अमरीका चले गए और अंतिम सांस तक अमरीका में ही रहे और जमाअत की ख़िदमत करते रहे। आपने एम. टी ए अटेली पोर्ट अमरीका के क़ियाम में विशेष किरदार अदा किया। पहले तो केवल वहां से ट्रांसमिट (transmit) करने का यह एक छोटा सा स्टूडियो था। फिर इस में वुसअत पैदा की गई और बाक़ायदा नॉर्थ, साउथ अमरीका के लिए एक अलैहदा विभाग, शोबा खोला गया और वहां मैं ने उनको एम. टी.ए. का डायरेक्टर बनाया। और बड़ी मेहनत से, बड़ी जाँ-फ़िशानी से बड़ी टेक्नीकल skill से जो उन्होंने हासिल नहीं की थी, दुनियावी इलम से उनको हासिल नहींहु ई अर्थात विशेषतः कोई डिग्री ले के नहीं पढ़ी, लेकिन यह काम करने का शौक़ था इसलिए ख़ुद इलम हासिल किया और इस टैली पोर्ट को उन्होंने बड़े अहसन रंग में चलाया और हर तरह से इस को टेकनीकली भी आला मयार पर पहुंचाया। उनके पीछे रहने वालों में उनकी पत्नी के अतिरिक्त एक बेटा और दो बेटियां शामिल हैं।

उनके बच्चों ने बताया कि हमेशा ख़ुदा तआला पर तवक्कुल करने वाले और मुश्किल वक़्त में दुआ की तरफ़ तवज्जा दिलाते थे। यही कहते थे कि जो अस्बाब हैं वे इस्तिमाल करो और फिर मुआमला हमेशा ख़ुदा तआला पर छोड़ो। मेहमान-नवाज़ी की सिफ़त बहुत विशेष थी। हर समय घर मेहमानों के लिए खुला रहता। बच्चों को हमेशा ख़िलाफ़त से भरपूर ताल्लुक़ की तलक़ीन करते। एम. टी.ए. के लिए जो भी सलाहियतें थीं इस्तिमाल करते बल्कि उनके बच्चे कहते हैं कि हस्पताल में भी जब अलग-अलग वक़्तों मैं बीमार रहे। ये अलग-अलग वक़्तों में काफ़ी लंबा समय बीमार रहे हैं। हस्पताल भी दाख़िल होते तो वहां भी एम. टी.ए. के लिए काम करते रहते थे। ग़रज़ कि एक वाक़िफ़-ए-ज़िंदगी का एक आला नमूना थे।

मिर्ज़ा मग़फ़ूर अहमद साहिब अमीर जमाअत अमरीका लिखते हैं कि बहुत बड़ी ख़ूबी यह थी कि न केवल अपने विभाग को बेहतर बनाने के लिए मेहनत और तवज्जा से काम करते थे बल्कि अपना वक़्त और इलम जमाअत के दूसरे कामों को देने में भी कभी ताम्मुल नहीं करते थे। कुछ जमाअती कामों में उन्होंने विनीत की भी इंतेहाई ख़ुशी और तवज्जा से मदद की। अगर जमाअती मुफ़ाद के लिए उनके इलम में कोई मालूमात आतीं तो वह जमाअती इंतेज़ामिया के साथ संपर्क करते और इस तरफ़ तवज्जा दिलाया करते थे। निज़ाम जमाअत के साथ पूरे सहयोग और इस की एहमियत का उनके क़ौल-ओ-फ़ेअल से बख़ूबी पता चलता था। ख़िलाफ़त के जांनिसार, मुतीअ और फ़रमांबर्दार थे। ख़लीफ़ा-ए-वक़्त के इर्शादात को समझने और उन पर अमल करने के लिए हर वक़त तैयार रहते थे। कहते हैं मैं ने हमेशा उनको ख़लीफ़तुल मसीह की ख़ाहिशात और तवक़्क़ुआत पर पूरी तनदही के साथ अमल करने की कोशिश करते हुए पाया।

अमीर जमाअत बुर्कीना फासो जो उन के अज़ीज़ भी हैं लिखते हैं कि बचपन का एक वाक़िया मशहूर है कि चंद माह के थे जब आप शदीद बीमार हो गए। आख़िरी आसार नज़र आने लगे। मौलाना ग़ुलाम रसूल साहिब राजीकी रज़ियल्लाहु अन्हो इन दिनों में उनके इलाक़े में क़ियाम पज़ीर थे। उनकी माता उनकी बीमारी में घबराहट में मौलवी साहब रज़ियल्लाहु अन्हो के पास उनको ले गईं और मौलवी साहब रज़ियल्लाहु अन्हो की गोद में देते हुए कहा मौलवी-साहब यह गया। और रोती जा रही थीं। मौलवी साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने बच्चे को उठाया और फ़रमाया ठीक हो जाएगा इसे वक़्फ़ कर दो। इस तरह वह बचपन में ही वक़्फ़ हो गए। वहां माँ ने अह्द किया कि वक़्फ़ कर दूँगी। ख़ुद भी यह कहते थे मुझे मीर साहिब ने तलक़ीन की थी क्योंकि मैं पढ़ाई इत्यादि में अच्छा नहीं था कि सूरः फ़ातेहा असैंबली के दौरान पढ़ा करो जो मैं मुस्तक़िल पढ़ता था।

शमशाद नासिर साहिब मुरब्बी कहते हैं और तक़रीबन हर एक ने उनकी यही ख़ूबियां लिखी हैं कि ख़िलाफ़त के अहकामात की पूरी इताअत और फ़रमांबर्दारी

करने वाले। अक्सर बीमार रहने के बावजूद किसी को कभी नहीं बताया और न कभी एहसास होने दिया कि किसी तकलीफ़ में हैं। बस हमेशा अपने काम से काम रखा और बड़ी मेहनत से इसी में लगे रहे। हर किस्म के मुआमलात पर बड़ी दस्तरस थी। गहराई से हर चीज़ का अध्ययन करते। फिर मुरब्बियान की राहनुमाई भी फ़रमाते थे। बेहतरीन मुंतज़िम भी थे और साथियों के साथ बहुत मुशफ़िक़ाना सुलूक करते थे। मेहमान-नवाज़ी भी थी उनमें। ग़ैरों ने भी महसूस किया केवल बच्चों ने ही नहीं लिखा। हर एक से मुस्कुरा के मिलना उनका शेवा था। तबीयत बड़ी धीमी थी परंतु हिम्मत से काम लेने वाले। अल्लाह तआला ने उनके दिमाग़ में अजीब सलाहियतें रखी थीं। मुरब्बी थे परंतु जब हज़रत ख़लीफ़तुल् मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह ने उनकी अरथ स्टेशन में तक़र्ररी फ़रमाई तो हर चीज़ का गहराई में जाकर अध्ययन किया और फिर उसको इंतेहाई सफ़लता तक ले गए।

जब नई डिश लगवाने के लिए कारवाई शुरू हुई ताकि वहां से प्रोग्राम सारे अमरीका में ट्रांसमिट हो सके तो संबंधित विभाग से इजाज़त लेनी थी। वहां से इन्सपैक्टर आया और उसने इजाज़त नहीं दी और फ़ार्म पर साइन नहीं किए। बहरहाल उन्होंने फिर मुझे लिखा। मैं ने कहा आप कोशिश करते रहीं। अल्लाह तआला मदद फ़रमाएगा। कुछ समय बाद वहां से दुबारा एक इन्सपैक्टर आया जो घाना का रहने वाला था। उसने जब जमाअत का नाम सुना तो कहने लगा कि मैं भी जमाअत के अहमदिया स्कूल में पढ़ा हुआ हूँ और फिर उसने वहीं उस पर साइन कर दिए और इजाज़त मिल गई। तो यह भी अल्लाह तआला की विशेष सहायता थी। उनकी मेहनत और दुआ से अल्लाह तआला ने इस काम को भी आसान कर दिया।

लईक मुश्ताक़ साहिब मुरब्बी सुरिनाम कहते हैं कि उन्होंने जुनूबी अमरीका के देशों का दौरा किया और एम. टी.ए. के बारे में मालूमात ली। तीन दिन सरेनाम में क़ियाम किया और उन्होंने कहा कि। मुझे ख़लीफ़ा-ए-वक़्त ने यहां एक उद्देश्य के लिए भिजवाया है मैं केवल यही काम करूँगा इसलिए कोई सैर का प्रोग्राम नहीं होगा। और पूरा वक़्त एम.टी.ए. की नशरियात के टैस्ट,घरों का दौरा कर के जमाअत के लोगों को एम. टी.ए. से इस्तिफ़ादा करने और नौजवानों को एम. टी.ए. की नशरियात के दौरान पेश आने वाले मसायल को हल करने के तरीक़े समझाने पर खर्च किया।

यह कहते हैं कि मेरे साथ एक दफ़ा उन्होंने वर्णन किया कि एक मुरब्बी ने मुझसे शिकवा किया। कई दफ़ा मुरब्बियान भी ऐसे शिकवे कर देते हैं। अब भी कर देते हैं कि हमें सात वर्ष जामिआ में पढ़ाया गया। अब हमें दफ़्तर में बिठा दिया गया है। तो मैं ने, चौधरी मुनीर साहिब ने उसे जवाब दिया था कि ख़लीफ़ा-ए-वक़्त बेहतर जानते हैं कि किस से कब क्या काम लेना है। मुबल्लिग़ सिलसिला हूँ। कहते हैं मैं भी मुबल्लिग़ सिलसिला हूँ परंतु पिछले पंद्रह वर्ष से ख़लीफ़ा-ए-वक़्त के हुक्म से मैं टैली पोर्ट का काम कर रहा हूँ। हथौड़ी पलास हाथ में होता है। टेक्नीकल काम भी करता हूँ। अगर मुझे ख़लीफ़ा-ए-वक़्त की तरफ़ से कहा जाए कि गलियों में झाड़ू फेरो तो मैं बड़ी खुशी के साथ यह काम करूँगा और ख़ुद को सफ़ाई वाला कहलाऊँगा।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी एक दफ़ा फ़रमाया था कि एक वक़्त आएगा जब हमें मुरब्बियान को यहां लगाना होगा। हमारे दफ़्तरों में काम करने वाले भी मुरब्बी होंगे। यह नहीं कि दूसरा कलेरीकल (clerical) स्टाफ़ लिया जाए। इसलिए हर मुरब्बी को यह दिमाग़ों से निकाल देना चाहिए कि उस से क्या ख़िदमत ली जा रही है। कहीं भी कोई भी ख़िदमत ली जा सकती है।

जामिआ पढ़े हैं तो अच्छी बात है कि एक दीनी इलम उनको हासिल हो गया। इस दीनी इलम को इस्तिमाल करते रहना चाहिए।

ग़ालिब ख़ान एम. टी.ए. स्टूडीयोज़ अमरीका के इंचार्ज हैं। कहते हैं हर काम वह ख़ुद तकमील तक पहुंचाने की कोशिश करते थे। इस का रिकार्ड रखना, स्टाफ़ के औक़ात, साईट देखना, इमारत की सफ़ाई का वह ख़ुद ख़्याल रखते थे। और हरवक़त इसी बात में तवज्जा रहती थी कि किस तरह इस निज़ाम को बेहतर से बेहतर किया जाए। फिर अपने साथियों से भी नरम मिज़ाजी से पेश आते। आला मुंतज़िम थे लेकिन मज़बूत अज़म-ओ-हिम्मत वाले थे।

मिर्ज़ा मुहम्मद अफ़ज़ल साहिब लिखते हैं कि उनसे छप्पन वर्ष से वाक़फ़ीयत थी। इकट्ठे अमरीका आए थे। ख़िलाफ़त के फ़िदाई थे। 1974 ई. में असीरी भी काटी। इख़लास-ओ-वफ़ा कूट कूट कर भरा हुआ था। इशक़ के जज़बे से ख़िदमत करते थे। काम का तरीक़ा बहुत मुनज़्ज़म हुआ करता था। किसी भी ख़िदमत से इंकार उनकी फ़ितरत में नहीं था। हमेशा उनको ख़िलाफ़त का सुलतान-ए-नसीर ही पाया।

ज़फ़र सरवर साहिब भी कहते हैं कि जब अमरीका से टैली पोर्ट की ट्रांसमिशन का आग़ाज़ हुआ तो उन्होंने हज़रत ख़लीफ़तुल् मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह को दरख़ास्त की कि टेक्नीकल काम है इस के लिए एक अंजीनर दिया जाए तो हज़रत ख़लीफ़तुल्-मसीह अल् राबे ने उनको फ़रमाया कि आप ख़ुद इंजीनियर बनने की कोशिश करें।

इसलिए फिर उन्होंने ख़ुद ही यह काम सीखा और इस पर उबूर हासिल किया और बड़े प्रभावी तरीक़े से उन्होंने ये सारे काम किए। उनत्तीस वर्ष तक उन्होंने एम.टी.ए. की ख़िदमत के बावजूद उसके कि इतना समय उनको दिल की बीमारी भी रही।

अब नॉर्थ अमरीका, साउथ अमरीका में उनकी वजह से ही एम. टी.ए. प्रोग्राम बड़े आराम से देखे जा रहे हैं।

डाक्टर हमीदुर्रहमान रसाहिब लास ऐंजलिस अमरीका लिखते हैं कि 1993 ई. में लास ऐंजलिस में उनकी तक़र्ररी हुई। हमारे साथ मिलकर चीनो (Chino) में ज़मीन ख़रीदी और फिर फ़ौरन मस्जिद की तामीर की कोशिश की। मरहूम बहुत निडर और बहादुर और खुदा पर भरोसा करने वाले इन्सान थे। चीनो के मेयर के पास जमाअत के परिचय के लिए उसके दफ़्तर गए और परिचय करवाने के बाद चीनो में मस्जिद की तामीर का बताया। मेयर ने फ़ौरन कहा कि मस्जिद बिल्कुल नहीं बनेगी।और बड़े ग़ुस्सा में यह जुमला कहा कि over my dead body यह सुनते ही चौधरी साहिब ग़ैरमामूली जोश के साथ खड़े हो गए और कहा कि मेयर साहिब यह मस्जिद अल्लाह तआला की इबादत-गाह है और बनेगी और ज़रूर बनेगी इसलिए अल् हमदु लिल्लाह वहां मस्जिद तामीर हुई और फिर उसी मेयर ने मस्जिद में आकर माफ़ी मांगी और फिर उसके बाद कई बार वह मस्जिद में आता रहा। बड़े निडर थे।

हम्माद साहिब मुरब्बी हैं। मुनीर साहिब उनके रिश्तेदार थे। कहते हैं मैं फ़ील्ड में आया हूँ तो मुझे शुरू में मुश्किलात पेश आनी शुरू हुईं। बड़े प्यार से मेरी बातें सुनें। मुझे समझाया। बड़ी पुरहकमत नसीहतें कीं और इस तरह जो मुआमलात और मुश्किलात थे मेरे ख़ुद बख़ुद हल हो गए। बहुत सारे मुआमलात मैं उनसे मैं नसीहत लिया करता था।

मुनीर शमस साहिब डायरेक्टर एम.टी.ए. कहते हैं कि टैली पोर्ट का सेट अप उन्होंने बड़े अहसन रंग में किया। चौधरी मुनीर साहिब की ख़ूबियों के साथ एक ख़ूबी यह थी कि हर काम में मश्वरा के साथ हमेशा जमाअत का पैसा बचाने की कोशिश करते थे और केवल वही मशीनरी हासिल करते थे जिसकी अज़हद ज़रूरत होती थी। आप के हर क़ौल-ओ-फ़ेअल में ख़िलाफ़त के साथ बेहद इख़लास-ओ-वफ़ा का ताल्लुक़ नुमायां होता था और यही होता था कि ख़लीफ़ा-ए-वक़्त के हर शब्द की हर्फ़ ब हर्फ़ इताअत की जाए। एम. टी.ए. टेली पोर्ट के डायरेक्टर थे लेकिन कोई नुमाइश और नमूद-ओ-नुमा यह नहीं था कि मैं ने यह काम किया और मेरी वजह से यह सफ़लता हो रही है। बड़ी आजिज़ी से काम करने वाले थे बल्कि दूसरों को क्रेडिट दे देते थे।

मैं ने देखा है बड़ी वफ़ा के साथ उन्होंने अपना वक़्फ़ निभाया और बेलौस हो कर उन्होंने एम.टी.ए. को अमरीका के बर्र-ए-आज़म में पहुंचाने की भरपूर कोशिश की। जो ईमानदारी से समझा उसके बारे में बड़े अच्छे मश्वरे दिए। मुझे भी लिखते रहते थे। आगे आ के अपनी एहमियत बताने का शौक़ नहीं था। बस एक लगन थी कि जो काम ख़लीफ़ा-ए-वक़्त की तरफ़ से मुझे सपुर्द किया गया है उसे मैं अहसन रंग में पूरा करने की कोशिश करूँ।

अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए दर्जात बुलंद फ़रमाए।

दूसरा वर्णन है श्रीमानअब्दुर्रहमान कटी (Kutty) साहिब अलन नूर (Alanallor) केराला पिछले दिनों में इन की भी वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मूसी थे। सोला वर्ष की

आयु में अपने मामूं मौलाना मुहम्मद उल्वी साहिब के द्वारा बैअत की तौफ़ीक़ पाई। नमाज़ रोज़े के पाबंद, जमाअत के साथ बहुत इख़लास का ताल्लुक़ रखने वाले, सादा तबीयत वाले, आजिज़ और नेक इन्सान थे। उनकी कोशिश होती थी कि हर काम में कोई न कोई दीनी पहलू ज़रूर शामिल रखते।

उनके बेटे लिखते हैं उन्होंने हमारी तर्बीयत में दीनी पहलू को प्राथमिकता दी। इसलिए सुबह सवेरे स्कूल जाने से पहले एक दो घंटे के लिए दीनी मदरसे में भेजते और रात को सोने से पहले क़ुरआन शरीफ़ की तिलावत बड़ी बाक़ायदगी से करवाते थे।

उनकी पत्नी तीन वर्ष पहले वफ़ात पा गई थीं। पीछे रहने वालों में दो बेटियां और चार बेटे शामिल हैं। एक बेटे शम्सुद्दीन मालाबारी साहिब मुबल्लिग़ इंचार्ज कबाबीर के तौर पर ख़िदमत की तौफ़ीक़ पा रहे हैं जो जनाज़े में शामिल नहीं हो सके थे। अल्लाह तआला उनको भी सब्र और हौसला अता फ़रमाए। मरहूम के दर्जात बुलंद फ़रमाए। मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए।

★ ★ ★

दारुस्सनाअत कादियान (Ahmadiyya Vocational Training Centre) में वर्ष 2024-2025 के प्रवेश लिए दाख़िला शुरू है

दारुस्सनाअत कादियान का आरंभ हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की मंज़ूरी और विशेष राहनुमाई से 2010 ई. में हुआ। विभाग का विशेष उद्देश्य अहमदी विद्यार्थियों को हुनर-मंद बनाना और टेकनीकल कोर्स विशेषता रोज़गार के अवसर पैदा करना है। दारुस्सनाअत कादियान सरकारी विभाग NSIC दिल्ली और ISO रजिस्टर्ड है। जिसमें एक वर्ष के निम्नलिखित कोर्स करवाए जाते हैं।

Plumbing, Electrician, Welding, Motor Vehicle, AC & Refrigerator, Diesel Mechanic, Computer Applications

कादियान के बाहर से आने वाले अहमदी विद्यार्थियों के लिए hostel और mess का इंतेज़ाम उपलब्ध है । रहने और food की कोई फ़ीस नहीं है। केवल कोर्स की बोर्ड फ़ीस आसान किस्तों में ली जाती है। ऐसे अहमदी नौजवान जो अपने स्कूल की शिक्षा पूर्ण नहीं कर सके या 8th और 10th के बाद टेक्नीकल कोर्स करने के ख़ाहिशमंद हों प्रवेश के लिए जल्द संपर्क करें। अहमदी बच्चों की दीनी शिक्षा का भी इंतेज़ाम मौजूद है। इसके अतिरिक्त रोज़ाना English Speaking और Personality Developmentकी क्लास भी ली जाती है। नए सैशन 2024-2025 के लिए दाख़िला शुरू हो गया है। जिसकी क्लासिज़ 16 जुलाई से शुरू होंगी।

अधिक जानकारी के लिए निम्नलिखित नम्बरज़ Email Id पर संपर्क कर सकते हैं।

darulsanaat.qadian@gmail.com
9872725895, 8077546198

(प्रिंसिपल दारुस्सनाअत कादियान)

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-क़रीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुत्बात जुमा और खिताबात, अध्याम्त्पूर्ण संदेश, ख़ुत्बा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इल्म के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर कर्म करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की शिक्षा-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी शिक्षा-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इसका सम्मान किया जाए। इसलिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे। (संस्थान)

★ ★ ★

129वां जलसा सालाना क़ादियान

27, 28, और 29 दिसम्बर 2024 ई. के आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 129वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए 27,28,29 दिसंबर 2024 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंज़ूरी प्रदान की है। जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नियत करके तैयार आरंभ करदें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले इस जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए और सईद रूहों के लिए हिदायत का माध्यम बनाए। इस जलसे के हर प्रकार से सफ़ल होने के लिए दुआएं करते रहें। आमीन।

(नाज़िर इस्लाह वा इरशाद क़ादियान)

★ ★ ★

हर उस चीज़ से बचो जो धर्म में बुराई और बिद्दत पैदा करने वाली है

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं :

"हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत में शामिल होने के लिए हर उस चीज़ से बचना होगा जो दीन में बुराई और बिद्दत पैदा करने वाली है .. बहुत सी बुराईयाँ हैं जो शादी ब्याह के अवसर पर की जाती हैं और जिनकी देखा देखी दूसरे लोग भी करते हैं। इस तरह समाज में ये बुराईयां जो हैं अपनी जड़ें गहरी करती चली जाती हैं और इस तरह दीन में और निज़ाम में एक बिगाड़ पैदा हो रहा होता है।"

(उद्धृत मशअले राह, भाग 5 हिस्सा 3 पृष्ठ 153)

ख़ुत्बः जुमअः

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के कसरत के साथ इस किस्म के वाक़ियात तारीख़ों में मिलते हैं कि उन्होंने ख़ुदा की राह में मारे जाने को ही अपने लिए सही राहत महसूस किया

सरिया बिर्रे मऊना में रवाना होने वाले सब सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो नौजवान थे। क़ुरआन के क़ारी होने की वजह से लोग उन्हें कर्रा के उपनाम से याद करते थे

हज़रत हिराम बिन मिल्हान ने कहा हे बिर्रे मऊना वालो मैं तुम्हारे पास अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का भेजा हुआ बन कर आया हूँ। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई उपासना के योग्य नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस के बंदे और रसूल हैं। तुम अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान ले आओं

"इस्लाम ने तलवार के ज़ोर से फ़तह नहीं पाई बल्कि इस्लाम ने इस आला तालीम के द्वारा से फ़तह पाई है जो दिलों में उतर जाती थी और अख़लाक़ में एक आला दर्जा का तग़य्युर पैदा कर देती थी"

(हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु)

अम्र बिन तुफ़ैल इस हमले के बाद ज़िंदा रहा। उसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बद्दुआ पहुंची और उसे ताऊन की बीमारी लाहक़ हो गई जिसकी वजह से वह कुफ़्र की हालत में ही मर गया

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इन हादसात का सख़्त सदमा हुआ, परंतु इस्लाम में हर सूरत में सब्र का आदेश दिया है

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह ख़बर सुन कर इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन पढ़ा और फिर खामोश हो गए

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इन वाक़ियात का जितना भी सदमा होता कम था, परंतु उस वक़्त आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने रजीअ और बिर्रे मऊना के ख़ूनी क़ातिलों के ख़िलाफ़ कोई जंगी कारवाई नहीं फ़रमाई

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने महीना भर नमाज़-ए-फ़ज्र में क़नूत फ़रमाया जिस में राल, ज़कवान और बनू लहयान पर लानत करते रहे

सरिया बिर्रे मऊना के हालात और वाक़ियात का वर्णन तथा मज़लूम फ़लस्तीनियों, पाकिस्तानी अहमदियों और दुनिया के उमूमी हालात के लिए दुआ की तहरीक

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 07 जून 2024 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَاالضَّآلِّيْنَ

आज जिस सरिया का वर्णन करूँगा सरिया हज़रत मुंज़िर बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हो या सरिया बिर्रे मऊना कहलाता है। यह दर्दनाक हादिसा भी 4 हिज्री में हुआ। कुछ के नज़दीक यह सरिया रजीअ से पहले और कुछ के नज़दीक रजीअ के बाद हुआ। यह वाक़िया भी सरिया रजीअ की तरह दुश्मन के वादा तौड़ने और निष्ठुरता का बदतरीन उदाहरण है

इस सरिया को सरिया बिर्रे मऊना कहा जाता है। बिर्रे मऊना मक्का से मदीना जाने वाले रास्ते पर बनू सुलेम के इलाक़े में एक कुँआं था और इसी नाम का इलाक़ा भी था। इसी वजह से इस का नाम सरिया बिर्रे मऊना मशहूर हुआ। इस सरिया के अमीर हज़रत मुन्ज़िर बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हो थे इसलिए उस को सरिया हज़रत मुंज़िर बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हो भी कहा जाता है। इसी तरह उसे सरिया तुल् कुरा के नाम से भी नामांकित किया जाता है

सरिया बिर्रे मऊना में रवाना होने वाले सब सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो नौजवान थे। क़ुरआन के क़ारी होने की वजह से लोग उन्हें कर्रा के लक़ब से याद किया करते थे

(सब्लुल् हुदा वल् रिशाद भाग 6 पृष्ठ 57 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

(इनसाइक्लोपीडिया भाग 6 पृष्ठ 491-487 दारुस्सलाम रिसर्च सैंटर)

(फ़र्हंग सीरत पृष्ठ 69 ज़व्वार अकैडमी कराची 2003 ई.)

इस सरिया के पस-ए-मंज़र के बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो लिखते हैं कि "क़बायल सुलेम व ग़त्फ़ान ये क़बायल अरब के बीच में सतह मुर्तफ़ा नजद पर आबाद थे और मुस्लमानों के ख़िलाफ़ क़ुरैश-ए-

-मक्का के साथ गठजोड़ रखते थे और आहिस्ता-आहिस्ता इन शरीर क़बायल की शरारत बढ़ती जाती थी और सारा सतह मुर्तफ़े नजद इस्लाम की अदावत के ज़हर से नामांकित होता चला जा रहा इसलिए "लिखा है कि" इन दिनों में जिनका हम इस वक़्त वर्णन कर रहे हैं एक व्यक्ति अबू बरा आम्री जो अरब के मध्य के क़बीला बनू आमिर का एक रईस था आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में मुलाक़ात के लिए उपस्थित हुआ। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बड़ी नरमी और शफ़क़त के साथ उसे इस्लाम की तब्लीग़ फ़रमाई और उसने भी बज़ाहिर शौक़ और तवज्जा के साथ आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तक़रीर को सुना परंतु मुस्लमान नहीं हुआ। जबकि उसने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से ये अर्ज़ किया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरे साथ अपने चंद अस्हाब नजद की तरफ़ रवाना फ़रमाएं जो वहां जा कर नजद वालों में इस्लाम की तब्लीग़ करें और मुझे उम्मीद है कि नज्दी लोग आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दावत को रद्द नहीं करेंगे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : मुझे तो नजद वालों पर भरोसा नहीं है। अबू बरा ने कहा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हरगिज़ फ़िक्र न करें। मैं उनकी हिफ़ाज़त का ज़ामिन हूँ। " जो लोग आप भेजेंगे। "चूँकि अबू बरा एक क़बीला का रईस और साहब-ए-असर आदमी था आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस के विश्वास दिलाने पर यक़ीन कर लिया और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की एक जमाअत नजद की तरफ़ रवाना फ़र्मा दी। यह तारीख़ की रिवायत है।

बुख़ारी में आता है कि क़बायल रेअल और ज़क्कान इत्यादि (जो मशहूर क़बीला बनू सुलेम की शाख़ थे) उनके चंद लोग आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और इस्लाम का इज़हार करके निवेदन किया कि हमारी क़ौम में से जो लोग इस्लाम के दुश्मन हैं उनके ख़िलाफ़ हमारी इमदाद के लिए चंद आदमी रवाना किए जाएं।" यहां यह तशरीह नहीं आई कि किस किस्म की इमदाद थी। तब्लीग़ी या फ़ौजी। बहरहाल "जिस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह दस्ता रवाना फ़रमाया। बदक़िस्मती से बिर्रे मऊना की तफ़सीलात में बुख़ारी की रिवायात में भी कुछ ख़लत वाक़्य हो गया है जिसकी वजह से हक़ीक़त पूरी तरह निर्धारित नहीं हो सकती परंतु बहरहाल इस क़दर यक़ीनी तौर पर मालूम होता है कि इस अवसर पर क़बायल रिअल और ज़क्कान इत्यादि के लोग भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में आए थे और उन्होंने ये दरख़ास्त की थी कि चंद सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो उनके साथ भिजवाए जाएं। इन दोनों रिवायतों की अनुसारत की यह सूरत हो सकती है कि रिअल् और ज़क्कान के लोगों के साथ अबू बरा आमेरी रईस क़बीला आमिर भी आया हो और उसने उनकी तरफ़ से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ बात की हो। इसलिए तारीख़ी रिवायात के अनुसार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह फ़रमाना कि मुझे नजद वाले की तरफ़ से इतमीनान नहीं है और उसका यह जवाब देना कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कोई फ़िक्र न करें। मैं इस का ज़ामिन होता हूँ कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो को कोई तकलीफ़ नहीं पहुँचेगी इस बात की तरफ़ इशारा करता है कि अबू बरा के साथ रिअल और ज़कवान के लोग भी आए थे जिनकी वजह से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़िक्रमंद थे। अल्लाह बेहतर जानता है बहरहाल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि ने सिफ़र 4 हिज्री में मुंज़िर बिन अम्र अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हो की इमारत में सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की एक पार्टी रवाना फ़रमाई। ये लोग उमूमन अंसार में से थे और संख्या में सत्तर थे और क़रीबन सारे के सारे क़ारी अर्थात क़ुरआन कंठस्थ करने वाले थे।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से, हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु पृष्ठ 517 से 518)

इस बारे में एक लेखक लिखता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हर-आन, हर घड़ी यही इच्छा दामन-गीर रहती थी कि अल्लाह का दीन सारी दुनिया में ग़ालिब आ जाए। सब लोग इस्लाम के साया में आ जाएं और एक अल्लाह की बंदगी इख़तेयार कर लें ताकि वे दुनिया और आख़िरत में सफ़ल हो जाएं। इसीलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दीन की दावत-ओ-तब्लीग़ के फ़र्ज़ को बेहद एहमियत देते थे और इसके लिए समस्त माध्यम प्रयोग करने के बाद और बड़ी से बड़ी क़ुर्बानी से भी दरेग़ नहीं फ़रमाते थे। यही वजह है कि नजद के ओबाश देही बाशिंदों से ख़तरा होने के बावजूद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अल्लाह पर तवक्कुल किया और अबू बरा की यक़ीन देहानी पर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की एक अज़ीम जमाअत उनकी तरफ़ रवाना फ़र्मा दी। इतना बड़ा इक़दाम आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने केवल दावत-ओ--तब्लीग़ का फ़र्ज़ पूरा करने और इस्लाम की नशर-ओ-इशाअत का मुक़द्दस काम आगे बढ़ाने के लिए किया।

(इनसाइक्लोपीडिया भाग 6 पृष्ठ 490-491 दारुस्सलाम रिसर्च सैंटर)

बहरहाल अमीर लश्कर हज़रत मुंज़िर बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हो बनू सलीम के एक रहबर मुत्तलिब सुलमी के हमराह निकले। जब वे बिर्रे मऊना पर पहुंचे तो ख़ेमे लगा लिए और हज़रत अम्र बिन उमय ज़म्री की निगरानी में अपनी सवारी के जानवर चरने के लिए छोड़ दिए। उनके हमराह हारिस बिन सिम्मा रज़ियल्ला-हु अन्होभी थे। इब्ने हशशाम ने हारिस की जगह मुंज़िर बिन मुहम्मद का नाम लिखा है।

(सब्लुल् हुदा वल् रिशाद भाग 6 पृष्ठ 58 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

इस सरिया के विषय में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के एक पत्र का भी वर्णन मिलता है जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आमिर बिन तुफ़ैल के नाम था।

इस की तफ़सील में लिखा है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो की जमाअत को आमिर बिन तुफ़ैल के नाम एक पत्र गिरामी भी इनायत फ़रमाया था। यह अबू बरा आमिर बिन मालिक का भतीजा और बनू आमिर के सरदारों में से एक घमंडी और मग़रूर सरदार था। इस का माजरा यह था कि यह व्यक्ति अपने दिल में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दावत की हक़्क़ानियत और सदाक़त का मोतरिफ़ था और यह हक़ीक़त अच्छी तरह समझ चुका था कि अनक़रीब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पूरे प्रायद्वीप अरब पर ग़लबा और इक़तेदार हासिल हो जाएगा लेकिन इसी समय में ख़ुद अपनी हुक्मरानी के ख़ाब देखने लगा। उसके ज़हन में ये शैतानी सोच अंगड़ाइयाँ लेने लगी कि क्यों न मैं ख़ुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास जा कर पहले ही से कोई सौदेबाज़ी कर लूं। इसलिए वह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और कहने लगा कि मैं आपको इख़ततेयार देता हूँ कि बादिया नशीनों पर आपकी और शहर के रहने वालों पर मेरी हुकूमत हो या आपके बाद मैं आपका ख़लीफ़ा और जांनशीन बनू या मैं ग़त्फ़ान के एक हज़ार सुर्ख़-ओ-ज़र्द घोड़ों और एक हज़ार ऊंटनियों के जत्थे के साथ आपसे लड़ूँगा। तीन शर्तें उसने पेश कीं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आमिर बिन तुफ़ैल की ये जाहिलाना मांग खंडित कर दी। कोई बात नहीं मानी। वह ना-मुराद हो कर गया।

सरिया बिर्रे मऊना के अवसर की मुनासबत से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुनासिब समझा कि उसे दीन की दावत दी जाए। इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने विशेषतः उसके नाम एक पत्र सहाबा रज़ियल्ला-हु अन्हो के हाथ रवाना फ़रमाया

(इनसाइक्लोपीडिया भाग 6 पृष्ठ 492-493 दारुस्सलाम रिसर्च सैंटर)

अमीर लश्कर हज़रत मुंज़िर बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत हिराम बिन मिल्हान को आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पत्र देकर क़बीला बनू आमिर के सरदार आमिर बिन तुफ़ैल की तरफ़ भेजा।

(सब्लुल् हुदा वल् रिशाद भाग 6 पृष्ठ 58 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

हज़रत हिराम बिन् मिलहान के इस पत्र ले जाने की तफ़सील में लिखा है कि हज़रत हिराम बन मिलहान ने अपने साथ दो और साथियों को लिया जिनमें से एक सहाबी एक टांग से विकलांग थे। उनका नाम काब बिन ज़ैद था जबकि दूसरे

साथी के नाम के बारे में अक्सर सीरत निगार ख़ामोश हैं जबकि बुख़ारी की एक शरह फ़तह अल् बारी में ज़ेरे बाब ग़ज़व अल् रजीअ में इस वाक़िया की तफ़सील वर्णन करते हुए दूसरे साथी का नाम मुंज़िर बिन मुहम्मद ने वर्णन किया है। बह-रहाल ये तीनों लोग चल पड़े।

हज़रत हिराम रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने दोनों साथियों को पहले ही बता रखा था कि तुम मेरे क़रीब ही रहना। मैं उनके पास जाता हूँ अगर उन्होंने मुझे अमान दे दी तो ठीक है और अगर मुझे क़तल कर दिया गया तो आप दोनों अपने साथियों के पास वापस चले जाना।

(दायरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भाग 7 पृष्ठ 156 बज़म-ए-इक़बाल लाहौर)

(फ़तह अल् बारी भाग 7 पृष्ठ 448 दारुल रियान लिल् तुर्रास काहिरा 1986 ई.)

इस के बाद वे ख़ुद बेधड़क अल्लाह के दुश्मन आमिर बिन तुफ़ैल के पास चले गए। वह बनू आमिर के कुछ लोगों के साथ बैठा हुआ था। हराम ने इन सबको संबोधित करके कहा क्या तुम मुझे इस बात पर अमान देते हो कि मैं तुम्हें रसूलु-ल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पत्र गिरामी पहुंचा दूं? उन्होंने कहा हाँ। हम आपको अमान देते हैं। हराम उनसे गुफ़्तगु करने लगे। मूसा बिन उक़बा की रिवायत में है कि हराम उनके सामने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ख़त पढ़ने लगे। तारीख़ तिबरी में है कि हराम ने उन लोगों से ख़िताब फ़रमाते हुए कहा :

हे बिर्रे मऊना वालो मैं तुम्हारे पास अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का फ़िरिस्तादा बन कर आया हूँ। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई उपासना के योग्य नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसके बंदे और रसूल हैं। तुम अल्लाह और उस के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान ले आओ।

अभी हराम की यह मुबारक गुफ़्तगु जारी ही थी कि वहां मौजूद लोगों ने अपनी अंदर की बुराई का मुज़ाहरा किया। उन्होंने अपने एक आदमी को इशारा कर दिया वह फ़ौरन हराम की पुश्त की तरफ़ जा पहुंचा और उन पर नेज़े का वार किया जो उनके जिस्म के आर-पार हो गया। एक रिवायत में है कि हराम ख़त लेकर आमिर बिन तुफ़ैल के पास गए तो इस ज़ालिम ने ख़त देखना भी गवारा नहीं किया और उन पर हमला करके उन्हें शहीद कर डाला।

(सीरत इनसाइक्लोपीडिया भाग 6 पृष्ठ 494-495 दारुस्सलाम रिसर्च सैंटर)

बहरहाल जब हज़रत हराम रज़ियल्लाहु अन्हो के आने में देर हुई तो मुस्लमान उनके पीछे आए। कुछ दूर जा कर उनका सामना इस जत्थे से हुआ जो हमला करने के लिए आ रहा था। उन्होंने मुस्लमानों को घेर लिया। दुश्मन संख्या में भी ज़्यादा थे। जंग हुई और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आसहाब रज़ियल्लाहु अन्हो शहीद कर दिए गए।

(अल् तबकातुल् कुब्रा भाग 2 पृष्ठ 40 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1990 ई.)

इस सरिया में हज़रत आमिर बिन फ़ुहैरा की शहादत का वर्णन यूं मिलता है ये हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के आज़ाद करदा ग़ुलाम थे। उनको यह एज़ाज़ भी हासिल है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ हजरत-ए-मदीना में शामिल थे। ये भी बिर्रे मऊना के वक़्त में शहीद हुए थे। जब वे लोग बिर्रे मऊना में क़तल किए गए और हज़रत अम्र बिन अमय ज़मरी रज़ियल्लाहु अन्हो के कैद किए गए तो आमिर बिन तुफ़ैल ने उनसे पूछा यह कौन है? और उसने एक मक़्तूल की तरफ़ इशारा किया तो अम्र बिन अमय ने जवाब दिया कि यह आमिर बिन फ़ुहैरा हैं। आमिर बिन तुफ़ैल ने कहा कि मैं ने आमिर बिन फ़ुहैरा को देखा कि वे क़तल किए जाने के बाद आसमान की तरफ़ उठाए गए हैं। यह अभी मुस्लमान नहीं हुआ था। तब उसने यह नज़ारा देखा। यहां तक कि मैं अब भी देख रहा हूँ कि आसमान उनके और ज़मीन के दरमयान है। फिर वह ज़मीन पर उतारे गए। नबी करीम सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम को उनकी ख़बर पहुंची और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके क़तल किए जाने की ख़बर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो को दी और फ़रमाया तुम्हारे साथी शहीद हो गए हैं और उन्होंने अपने रब से दुआ की है कि हे रब! हमारे विषय में हमारे भाईयों को बता कि हम तुझसे ख़ुश हो गए और तू हमसे ख़ुश हो गया। इसलिए अल्लाह तआला ने इस के विषय में बता दिया। सही बुख़ारी की यह रिवायत है।

हज़रत आमिर बिन फ़ुहैरा को किस ने शहीद किया, इस के बारे में मतभेद है। कुछ रिवायात में है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो को आमिर बिन तुफ़ैल ने शहीद किया जबकि दूसरी रिवायत से मालूम होता है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो को जबार बिन सल्मा ने शहीद किया।

(सही अल् बुख़ारी किताब अल् मग़ाज़ी बाब ग़ज़व अल् र्जीह हदीस 4093)

(अल् इस्तेआब भाग 2 पृष्ठ 796 दारुल जलील बेरूत 1992 ई.)

(अल् इस्तेआब भाग 1 पृष्ठ 229-230 दारुल जलील बेरूत 1992 ई.)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो हज़रत आमिर बिन फ़ुहैरा की शहादत के वाक़िया का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि :

"इस्लाम ने तलवार के ज़ोर से फ़तह नहीं पाई बल्कि इस्लाम ने इस आला तालीम के द्वारा से फ़तह पाई है जो दिलों में उतर जाती थी और अख़लाक़ में एक आला दर्जा का तग़य्युर पैदा कर देती थी"

एक सहाबी कहते हैं मेरे मुस्लमान होने की वजह महिज़ यह हुई कि में इस क़ौम में मेहमान ठहरा हुआ था जिसने ग़द्दारी करते हुए मुस्लमानों के सत्तर क़ारी शहीद कर दिए थे। जब उन्होंने मुस्लमानों पर हमला किया तो कुछ तो ऊंचे टीले पर चढ़ गए और कुछ उनके मुक़ाबला में खड़े रहे। चूँकि दुश्मन बहुत बड़ी संख्या में था और मुस्लमान बहुत थोड़े थे और वे भी निहत्ते और बे-सर-ओ-सामान थे इसलिए उन्होंने एक-एक करके समस्त मुस्लमानों को शहीद कर दिया। आख़िर में केवल एक सहाबी रह गए जो हिज्रत में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वस-ल्लम के साथ सम्मिलित थे और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के आज़ाद करदा ग़ुलाम थे उनका नाम आमिर बिन फ़ुहैरा था। बहुत से लोगों ने मिलकर उनको पकड़ लिया और एक व्यक्ति ने ज़ोर से नेज़ा उनके सीने में मारा। नेज़े का लगना था कि उनकी ज़बान से बे-इख़्तियार यह फ़िक़रा निकला कि فُزْتُ وَرَبِّ الْكَعْبَةِ काअबा के रब क़सम! मैं सफ़ल हो गया।" यह वर्णन करने वाला लिखता है जो उस वक़्त मुस्लमान नहीं थे कि "जब मैं ने उनकी ज़बान से यह फ़िक़रा सुना तो मैं हैरान हुआ और मैं ने कहा यह व्यक्ति अपने रिश्तेदारों से दूर, अपने बीवी बच्चों से दूर, इतनी बड़ी मुसीबत में मुबतला हुआ और नेज़ा उसके सीने में मारा गया परंतु इस ने मरते हुए अगर कुछ कहा तो केवल यह कि "काअबा के रब की क़सम मैं सफ़ल हो गया।" क्या यह व्यक्ति पागल तो नहीं? इसलिए' कहने लगा कि "मैं ने कुछ और लोगों से पूछा कि यह क्या बात है और इस के मुँह से ऐसा फ़िक़रा क्यों निकला? उन्होंने कहा तुम नहीं जानते यह मुस्लमान लोग वाक़िया में पागल हैं। जब यह ख़ुदा तआला की राह में मरते हैं तो समझते हैं कि ख़ुदा तआला उनसे राज़ी हो गया और उन्होंने सफ़लता हासिल कर ली। कहता है कि "मेरी तबीयत पर इसका इतना प्रभाव हुआ कि मैं ने फ़ैसला कर लिया कि मैं इन लोगों का मर्कज़ जा कर देखूँगा और ख़ुद उन लोगों के मज़हब का अध्ययन करूँगा। इसलिए कहने लगा कि "मैं मदीना पहुंचा और मुस्लमान हो गया"तालीम सुन के। "सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि :

इस वाक़िया का कि एक व्यक्ति के छाती में नेज़ा मारा जाता है और वह वतन से कोसों दूर है। उस का कोई अज़ीज़ और रिश्तेदार उसके पास नहीं और उस की ज़बान से यह निकलता है कि فُزْتُ وَرَبِّ الْكَعْبَةِ उस की तबीयत पर इतना असर था कि जब वह यह वाक़िया सुनाया करता और فُزْتُ وَرَبِّ الْكَعْبَةِ के शब्दों पर पहुंचता था तो उस वाक़िया की हैबत की वजह से यकदम उसका जिस्म काँपने लग जाता और आँखों से आँसू रवां हो जाते।

तो इस्लाम अपनी ख़ूबियों की वजह से फैला है आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया। "ज़ोर से नहीं।" फैला

(सैर-ए-रुहानी, अनवारुल उलूम भाग 22 पृष्ठ 250-251)

हज़रत आमिर बिन फ़ुहैरा शहादत के वक़्त उनके मुँह से जो अल्फ़ाज़ निकले हैं उनमें فُزْتُ وَرَبِّ الْكَعْبَة और فُزْتُ وَاللهदोनों शब्द मिलते हैं। दोनों रिवायतें हैं और ये अल्फ़ाज़ और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के मुँह से भी निकले थे। इसलिए इस बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने वर्णन भी फ़रमाया है। आप रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि "हमें तारीख़ पढ़ने से मालूम होता है कि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो जंगों में इस तरह जाते थे कि उनको यूं मालूम होता था कि जंग में शहीद होना उनके लिए ऐन राहत और ख़ुशी का मूजिब है और अगर उनको लड़ाई में कोई दुख पहुंचता था तो वह इस को दुख नहीं समझते थे बल्कि सुख ख़्याल करते थे। इसलिए सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के कसरत के साथ इस किस्म के वाक़ियात तारीख़ों में मिलते हैं कि उन्होंने ख़ुदा की राह में मारे जाने को ही अपने लिए ऐन राहत महसूस किया।

उदाहरणतः वे हुफ़्फ़ाज़ जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अरब के बीच में के एक क़बीला की तरफ़ तब्लीग़ के लिए भेजे थे उनमें से हराम बिन् मिल्हान इस्लाम का पैग़ाम लेकर क़बीला आमिर के रईस आमिर बिन तुफ़ैल के पास गए और बाक़ी सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो पीछे रहे। शुरू में तो आमिर बिन तुफ़ैल और इस के साथियों ने मुनाफ़िक़ाना तौर पर उनकी आओ-भगत की लेकिन जब वह मुतमइन हो कर बैठ गए और तब्लीग़ करने लगे तो उनमें से कुछ शरीरों ने एक ख़बीस को इशारा किया और उसने इशारा पाते ही हिराम बन मिल्हान पर पीछे से नेज़ा का वार किया और वे गिर गए। गिरते वक़्त उनकी ज़बान से बेसाख़ता निकला कि اَللّٰهُ اَكْبَرُ فُزْتُ وَرَبِّ الْكَعْبَةِ अर्थात मुझे काअबा के रब की क़सम! मैं नजात पा गया। फिर इन शरीरों ने बाक़ी सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो का घेराव किया और उन पर हमला-आवर हो गए। इस अवसर पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के आज़ाद करदा ग़ुलाम आमिर बिन फ़ुहैरा हिज्रत के सफ़र में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ थे उनके विषय में वर्णन आता है बल्कि ख़ुद इनका क़ातिल जो बाद में मुस्लमान हो गया था वह अपने मुस्लमान होने की वजह ही यह वर्णन करता था कि जब मैं ने आमिर बिन फ़ुहैरा शहीद किया तो उनके मुँह से बेसाख़्ता निकला فُزْتُ وَاللهِ। अर्थात ख़ुदा की क़सम! मैं तो अपनी मुराद को पहुंच गया हूँ। ये वाक़ियात बताते हैं कि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के लिए मौत बजाय दुख के ख़ुशी का मूजिब होती थी।"

(एक आयत की पुर मारीफ़ तफ़सीर, अनवारुल उलूम भाग 18 पृष्ठ 612-613)

हज़रत आमिर बिन फ़ुहैरा को शहीद करने वाले जब्बार बिन सल्मा् जो कि बाद में मुस्लमान हो गए थे वर्णन करते हैं कि जिस चीज़ ने मुझे इस्लाम की तरफ़ खींचा वह यह है कि मैं ने बिर्रे मऊना के दिन आमिर बिन फ़ुहैरा दोनों कंधों के दरमयान ताक कर नेज़ा मारा और मैं ने नेज़े की उनके सीने से पार होती देखी। फिर तुरंत बाद मैं ने उन्हें ये कहते सुना। فُزْتُ وَاللهِ कि अल्लाह की क़सम मैं सफ़ल हो गया। ये अल्फ़ाज़ मेरे कानों से उतर कर मेरे दिल में उतर गए। मैं सोच में पड़ गया कि आख़िर इन शब्दों का क्या मतलब होगा? भला उन्हें कौन सी सफ़लता मिली? मैं ने तो उन्हें क़तल किया है।

मैं इसी कठिनाई में एक मुस्लमान व्यक्ति ज़ह्हाक बिन सुफ़ियान किलाबी के पास गया। उन्हें सारा वाक़िया सुनाया और उन अल्फ़ाज़ का अर्थ पूछा। उन्होंने बताया कि इस सफ़लता से मुराद जन्नत को पा लेना है। यह सुनकर मैं ने कहा कि वाक़ई अल्लाह की क़सम वह सफ़ल हो गए और साथ ही उन्होंने मुझे इस्लाम स्वीकार करने की दावत दी तो मैं ने इस्लाम स्वीकार कर लिया।

(ओसोदुल गाबा भाग 1 पृष्ठ 504-505 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

(इनसाइक्लोपीडिया भाग 6 पृष्ठ 502-503 दारुस्सलाम रिसर्च सैंटर)

इस सरिया बिर्रे मऊना के बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो लिखते हैं कि "जब ये लोग इस मुक़ाम पर पहुंचे जो एक कुवें की वजह से बिर्रे मऊना के नाम से मशहूर था तो उन में से एक व्यक्ति हराम बिन मिल्हान जवानस बिन मालिक के मामूं थे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ से दावत-ए-इस्लाम का पैग़ाम लेकर क़बीला आमिर जो अनस बिन मालिक के भतीजे आमिर बिन तुफ़ैल के पास आगे गए और बाक़ी सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो पीछे रहे। जब हराम बिन् मिल्हान आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के एलची के तौर पर आमिर बिन तुफ़ैल और इसके साथियों के पास पहुंचे तो उन्होंने शुरू में तो मुनाफ़िक़ाना तौर पर आओ-भगत की लेकिन जब वह मुतमइन हो कर गए" अर्थात हिराम बन मिल्हान जब मुतमइन हो गए "और इस्लाम की तब्लीग़ करने लगे तो उन में से कुछ शरीरों ने किसी आदमी को इशारा करके इस बेगुनाह एलची को पीछे की तरफ़ से नेज़ा का वार करके वहीं ढेर कर दिया। इस वक़्त हिराम बन मिल्हान की ज़बान पर यए शब्द थे। اَللّٰهُ اَكْبَرُ فُزْتُ وَرَبِّ الْكَعْبَةِ अर्थात "अल्लाहु-अकबर काअबा के रब की क़सम मैं तो अपनी मुराद को पहुंच गया।" आमिर बिन तुफ़ैल ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के एलची के क़तल पर ही इकतिफ़ा नहीं की बल्कि उसके बाद अपने क़बीला बनु मर्वान के लोगों को उकसाया कि वे मुस्लमानों की बक़ीया जमाअत पर हमला-आवर हो जाएं परंतु उन्होंने इस बात से इंकार किया और कहा कि हम अबू बरा की ज़िम्मेदारी के होते हुए मुस्लमानों पर हमला नहीं करेंगे। इस पर आमिर ने क़बीला सुलेम में से बनू रेल और ज़कवान और उसेय्या इत्यादि को (वही जो बुख़ारी की रिवायत के अनुसार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास वफ़द बन कर आए थे) अपने साथ लिया और ये सब लोग मुस्लमानों की उस क़लील और बे बस जमाअत पर हमला आवर हो गए। मुस्लमानों ने जब इन वहशी दरिंदों को अपनी तरफ़ आते देखा, तो उनसे कहा कि हमें तुमसे कोई आक्रमण नहीं। हम तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ से एक काम के लिए आए हैं और हम तुमसे लड़ने के लिए नहीं आए। परंतु उन्होंने एक नहीं सुनी और सब को तलवार के घाट उतार दिया।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु पृष्ठ 518 से 519)

ज़ालिमों का हमेशा यही ढंग रहा है।

बिर्रे मऊना के शुहदा के बारे में लिखा है कि मुग़ाजी वालों की सहमति है कि इस सरिया में हज़रत अम्र बिन उमय्या ज़म्री और काब बिन ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हो के अतिरिक्त बाक़ी सारे सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो को शहीद कर दिया गया था। हज़रत काब बिन ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हो बिर्रे मऊना के दिन ज़ख़मी हुए और ख़ंदक़ के दिन फ़ौत हुए और हज़रत अम्र बिन उमय्या मुआविया के समय में फ़ौत हुए। इस सरिया में शामिल होने वाले समस्त सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो के अस्मा सीरत-ओ-तारीख़ की कुतुब में दर्ज नहीं हैं जबकि उन्होंने उनत्तीस के क़रीब शहीद होने वाले सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो के नाम दर्ज किए हैं। इस वक़्त मैं ये नाम नहीं लेता। जब इशाअत होगी तो उस वक़्त वहां छप जाऐंगे। लंबी फ़हरिस्त है। ये उनत्तीस नाम निम्नलिखित हैं।

1.हज़रत आमिर बिन फ़ुहैरा रज़ियल्लाहु अन्हो 2 हज़रत हकम बिन केसान रज़ियल्लाहु अन्हो ,3. हज़रत मुनज़िर बिन मोहम्मद रज़ियल्लाहु अन्हो, 4। हज़रत अबू उबैय बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हो, 5.हज़रत हारिस बिन सिम्मा रज़ियल्लाहु अन्हो, 6. हज़रत उबय्य बिन माज़ रज़ियल्लाहु अन्हो, 7.हज़रत अनस बिन माज़ रज़ियल्लाहु अन्हो, 8.हज़रत अबू शेख़ बिन अबी साबित रज़ियल्लाहु अन्हो, 9.हज़रत हराम बिन् मिल्हान रज़ियल्लाहु अन्हो ,10. हज़रत सुलेम बिन् मिल्हान, 11. हज़रत सुफ़ियान बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हो, 12. हज़रत मालिक बन साबित रज़ियल्लाहु अन्हो, 13. हज़रत उर्वा बिन असमा रज़ियल्लाहु अन्हो बिन सल्त्, 14. हज़रत कुतेबा बिन् अबद उमर रज़ियल्लाहु अन्हो, 15. हज़रत मुनज़िर बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हो, 16. हज़रत मुआज़् बिन माइस रज़ियल्लाहु अन्हो, 17. हज़रत आयज़ बिन माइज़ रज़ियल्लाहु अन्हो, 18. हज़रत मसऊद बिन साद रज़ियल्लाहु अन्हो, 19. हज़रत ख़ालिद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हो, 20 हज़रत सफ़वान बिन हातिब रज़ियल्लाहु अन्हो, 21. हज़रत साद बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हो, 22. हज़रत तुफ़ैल बिन

साद रज़ियल्लाहु अन्हो, 23. हज़रत सहल बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हो, 24. हज़रत अब्दुल्लाह बिन केस रज़ियल्लाहु अन्हो, 25. हज़रत नाफ़े बिन बुदेल् बिन वर्का रज़ियल्लाहु अन्हो, 26. हज़रत ज़हाक बिन अबद उमर रज़ियल्लाहु अन्हो। ये हज़रत कुत्बा रज़ियल्लाहु अन्हो केभाई थे।, 27. हज़रत उमेर बिन माबद रज़ियल्लाहु अन्हो। अल्लामा इब्ने इसहाक़ ने उनका नाम अम्र बताया है।, 28. हज़रत ख़ालिद बिन काअब रज़ियल्लाहु अन्हो, 29. हज़रत सुहेल बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हो।

(सब्लुल् हुदा वल् रिशाद भाग 6 पृष्ठ 61-63 दारुल कुतुब इल्मिया,
ओसोदुल गाबा भाग 4 पृष्ठ 182 दारुल कुतुब इल्मिया)

बहरहाल ज़िंदा बच जाने वाले सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के बारे में लिखा है कि इस सरिया में शामिल होने वाले सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो में से दो लोग हज़रत अम्र बिन उमय्या ज़मरी रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत मुंज़िर बिन मुहम्मद रज़ियल्लाहु अन्हो, कुछ सीरत निगारों के नज़दीक मुंज़िर के बजाए हारिस बिन सम्मा थे। "उस वक़्त ऊंटों इत्यादि के चराने के लिए अपनी जमाअत से अलग हो कर इधर-उधर गए हुए थे। उन्होंने दूर से अपने डेरा की तरफ़ नज़र डाली तो क्या देखते हैं कि परिंदों के झुंड के झुंड हवा में उड़ते फिरते हैं। वे इन सहराई इशारों को ख़ूब समझते थे। फ़ौरन ताड़ गए कि कोई लड़ाई हुई है। वापस आए तो ज़ालिम कुफ़्फ़ार के ख़ून बहाने का कारनामा आँखों के सामने था। दूर से ही यह दृश्य देखकर उन्होंने फ़ौरन आपस में मश्वरा किया कि अब हमें क्या करना चाहिए? एक ने कहा कि हमें यहां से तुरंत भाग निकलना चाहिए और मदीना में पहुंच कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सूचना देनी चाहिए परंतु दूसरे ने इस राय को स्वीकार नहीं किया और कहा कि मैं तो इस जगह से भाग कर नहीं जाऊँगा जहां हमारा अमीर मुंज़िर बिन अम्र शहीद हुआ है। इसलिए वह आगे बढ़ कर लड़ा और शहीद हुआ।" ये सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का हवाला है।

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु पृष्ठ 519)
(इनसाइक्लोपीडिया भाग 6 पृष्ठ 499 दारुस्सलाम रिसर्च सैंटर)

हज़रत अम्र बिन अमय ज़म्री के अतिरिक्त एक और व्यक्ति भी ज़िंदा बच्चा जो पांव से लंगड़ा था। उस सहाबी का नाम काब बिन ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हो था। कुछ रिवायात से पता लगता है कि कुफ़्फ़ार ने उन पर भी हमला किया था। यह हज़रत हराम बिन मिलहान के साथ थे जिस से वह शदीद ज़ख़मी हुए और कुफ़्फ़ार ने उन्हें मुर्दा समझ कर छोड़ दिया हालाँकि शदीद ज़ख़मी होने के बावजूद उनमें ज़िंदगी की आशा बाक़ी थी। उन्हें शुहदा की लाशों के दरमयान में से उठा लिया गया। इस के बाद वह ज़िंदा रहे। अंततः उन्हें ग़ज़वा ख़ंदक़ में शहादत प्राप्त हुई।

(इनसाइक्लोपीडिया भाग 6 पृष्ठ 499 दारुस्सलाम रिसर्च सैंटर)

हज़रत अम्र बिन उमय्या रज़ियल्लाहु अन्हो के गिरफ़्तार होने के बारे में लिखा है कि हज़रत अम्र बिन उमय्या रज़ियल्लाहु अन्हो गिरफ़्तार हो गए और मुख़ालेफ़ीन के पूछने पर हज़रत अम्र रज़ियल्लाहु अन्हो ने बताया कि मैं क़बीला बनू मुज़र् से हूँ। इस पर आमिर बिन तुफ़ैल ने अम्र को पकड़ा और उनकी पेशानी के बाल काट दिए। फिर उन्हें अपनी माँ की तरफ़ से आज़ाद कर दिया जिसने एक ग़ुलाम को आज़ाद करने की मन्नत मान रखी थी। अरब जब किसी को क़ैदी बनाते और बाद में उसे आज़ाद करने और उस के साथ एहसान करने का इरादा करते तो उसकी पेशानी के बाल काट देते थे। इस के बाद अम्र बिन उमय्या वहां से रवाना हुए यहां तक कि एक साया-दार जगह पर पहुंच कर बैठ गए। उसी वक़्त दो आदमी वहां और आए और हज़रत अम्र रज़ियल्लाहु अन्हो के पास आकर बैठ गए। अम्र ने उन दोनों से उनके विषय में पूछा तो उन्होंने बताया कि हम बनू आमिर से हैं। एक रिवायत के अनुसार उन्होंने ख़ुद को बनू सुलेम का बताया। इन दोनों के साथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का मुआहिदा था जिसके अधीन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनको अमान दे रखी थी परंतु अम्र बिन अमय को इस मुआहिदे का पता नहीं था। अम्र इन दोनों के सोने का इंतेज़ार करने लगे। जब उन्हें नींद आ गई तो अम्र ने इन दोनों को क़तल कर दिया। उनके ज़हन में उस वक़्त केवल यह ख़्याल था कि उन्होंने उनके द्वारा बनू आमिर से सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो का बदला ले लिया है। इसके बाद जब अम्र रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आ पहुंचे और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस वाक़िया की सूचना दी और इन दोनों आदमियों को क़तल करने की ख़बर भी सुनाई तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : तुमने दो ऐसे आदमियों को क़तल किया है जिनकी हमें दियत अदा करनी होगी। इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनकी दियत अदा फ़रमाई। फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के क़तल के वाक़िया के बारे फ़रमाया : यह अबू बरा की हरकत है। मैं इसी वजह से नापसंद कर रहा था कि मैं सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो को उस के साथ भेजूँ और मुझे संदेह लाहक़ था कि कहीं ये क़बायल सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो को नुक़्सान न पहुंचाएं।

जब अबू बरा को मालूम हुआ कि उसके भतीजे आमिर बिन तुफ़ैल ने उस की पनाह और अमान को तोड़ दिया था तो उसको बहुत सदमा हुआ और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो का उसकी वजह से जो अंजाम हुआ इस से उसे सदमा हुआ। इसलिए अबू बरा के बेटे राबिया ने आमिर बिन तुफ़ैल पर हमला किया जो उसका चचाज़ाद भाई था। रबिया ने आमिर को नेज़ा मारा जो उसकी रान में लगा और वह अपने घोड़े से गिर पड़ा। आमिर ने चिल्ला कर कहा कि अगर मैं मर गया तो मेरा ख़ून अबू बरा पर होगा और अगर मैं ज़िंदा रहा तो मैं अपना मुआमला ख़ुद देखूँगा जबकि अम्र बिन तुफ़ैल इस हमले के बाद ज़िंदा रहा। उसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बद्दुआ पहुंची और उसे ताऊन की बिमारी लाहक़ हो गई जिसकी वजह से वह हालत-ए-कुफ़्र में ही मर गया।

(सीरतुल हल्बिया भाग 3 पृष्ठ 242-243 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)
(दायरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भाग 7 पृष्ठ 164 बज़म-ए-इक़बाल लाहौर)
(अल् तफ़सीर अल् -कबीर अल्लामा राज़ी भाग 9 भाग 18पृष्ठ 12 दारुल कुतुब इल्मिया 2004 ई.)

बहरहाल अबू बरा भी इस में सम्मिलित है। शुरू में उनको चाहिए था कि आते और उन लोगों को रोकते। जहां तक अबू बरा अर्थात आमिर बिन मालिक का ताल्लुक़ है तो उस के बारे में दोनों तरह के अक़्वाल मिलते हैं। कुछ उल्मा ने उसे सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो में शुमार किया है जैसा कि एक रिवायत में है कि अबू बरा आमिर बिन मालिक क़बीला बनू बकर और बनू जाफ़र के पच्चीस लोगों के साथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आया तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आमिर बिन मालिक और ज़ह्हाक बिन सुफ़ियान किलाबी को बनू बकर और बनू जाफ़र पर आमिल निर्धारित कर दिया। यह रिवायत दलालत करती है कि यह बाद में मुस्लमान हो गया था जबकि दूसरे कथन के अनुसार अबू बरा मुस्लमान नहीं हुआ था। बहरहाल ये दोनों तरह हैं।

(अल् असाबा फ़ी तमीईज़ अल् सहाबा भाग 3 पृष्ठ 485-486 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो इस बारे में फ़रमाते हैं कि "आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो को रजीअ की घटना और बिर्रे मऊना की घटना की सूचना क़रीबन एक ही वक़्त में मिली और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस का सख़्त सदमा हुआ। यहाँ तक की रिवायतों में वर्णन हुआ है कि ऐसा सदमा न इस से पहले आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कभी हुआ था और न बाद में कभी हुआ। वाक़ई क़रीबन अस्सी सहाबियों का उस तरह धोखे के साथ अचानक मारा जाना और सहाबी भी वे जो अक्सर हुफ़्फ़ाज़ क़ुरआन में से थे और एक ग़रीब बेनफ़्स वर्ग से ताल्लुक़ रखते थे। अरब के वहशयाना रस्मो-रिवाज को देखते हुए भी कोई मामूली वाक़िया नहीं था और ख़ुद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए तो यह ख़बर गोया अस्सी बेटों की वफ़ात की ख़बर के समान थी बल्कि इस से भी बढ़कर, क्योंकि एक रुहानी इन्सान के लिए रुहानी रिश्ता यक़ीनन इससे बहुत ज़्यादा अज़ीज़ होता है जितना कि एक दुनियादार व्यक्ति को दुनियावी रिश्ता अज़ीज़ है। अतः आँहज़रत सल्लल्लाहो

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 09 Thursday 04-18 July 2024 Issue No. 27-29

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

अलैहि वसल्लम को इन हादिसात का सख़्त सदमा हुआ, परंतु इस्लाम में हर सूरत में सब्र का हुक्म है आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह ख़बर सुनकर इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन पढ़ा और फिर ये अलफ़ाज़ फ़रमाते हुए खामोश हो गए कि .. "यह अबू बरा के काम का समरा है वर्ना में तो उन लोगों के भिजवाने को पसंद नहीं करता था और नजद वालों की तरफ़ से डरता था।"

बिर्रे मऊना की घटना और रजई से क़बायल अरब के इस अत्यधिक दर्जा के द्वेष और दुश्मनी का पता चलता है जो वे इस्लाम और मुतबईन-ए-इस्लाम के विषय में अपने दिलों में रखते थे। यहाँ तक कि उन लोगों को इस्लाम के ख़िलाफ़ ज़लील तरीन किस्म के झूठ और दग़ा और फ़रेब से भी कोई परहेज़ नहीं था और मुस्लमान बावजूद अपनी कमाल होशियारी और बेदारमग़ज़ी के बाज़-औक़ात अपनी मोमिनाना हुस्न ज़न्नी में उनके दाम का शिकार हो जाते थे। हुफ़्फ़ाज़ क़ुरआन, नमाज़ पढ़ने वाले, तहज्जुद पढ़ने वाले, मस्जिद के एक कोने में बैठ कर अल्लाह का नाम लेने वाले और फिर ग़रीब मुफ़लिस फ़ाक़ों के मारे हुए ये वे लोग थे जिनको उन ज़ालिमों ने दीन सीखने के बहाने से अपने वतन में बुलाया और फिर जब मेहमान की हैसियत में वे उनके वतन में पहुंचे तो उनको निहायत बेरहमी के साथ तह-ए-तेग़ कर दिया।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इन वाक़ियात का जितना भी सदमा होता कम था, परंतु उस वक़्त आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने रजीअ और बिर्रे मऊना के ख़ूनी क़ातिलों के ख़िलाफ़ कोई जंगी कारवाई नहीं फ़रमाई।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु पृष्ठ 520-521)

वाक़िया रजीअ और वाक़िया बिर्रे मऊना के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक माह तक नमाज़ में क़नूत फ़रमाया। एक रिवायत के अनुसार रजीअ के वाक़िया और बिर्रे मऊना के सानिहा की भयावह ख़बर आँ-हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को एक ही रात में मिली थी। इन दोनों वाक़ियात में सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हो को धोका और ग़द्दारी से क़तल किया गया था। रजीअ में केवल दस सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो थे जबकि सरिया बिर्रे मऊना में सत्तर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो थे जिनमें से केवल दो बाक़ी ज़िंदा रहे। इसलिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बिर्रे मऊना के वाक़िया पर इस क़दर गहरा दुख और मलाल लाहक़ हुआ कि इस का अंदाज़ा इस रिवायत से लगाया जा सकता है जिस में हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि मैं ने कभी नहीं देखा कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को किसी बात पर इतना क़लक़ हुआ हो जितना आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को शुहदाए बिर्रे मऊना पर हुआ।

(इनसाइक्लोपीडिया भाग 6 पृष्ठ 506 दारुस्सलाम रिसर्च सैंटर)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने महीना भर नमाज़-ए-फ़ज्र में क़नूत फ़रमाया जिस में रिअल, ज़कवान और बनू लहयान पर लानत करते रहे।

(ओसोदुल गाबा भाग 3 पृष्ठ 108 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2003 ई.)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि नबी सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम ने रिअल और ज़कवान क़बीलों पर एक माह तक बद्दुआ की।

(सही अल् बुख़ारी किताब अल् वित्र बाब अल् कनूत क़बल रूकू व बादहू हदीस 1003)

सही मुस्लिम में दुआ के अलफ़ाज़ इस तरह दर्ज हैं कि :

हे अल्लाह बनू लह्यान, रिह्ल, ज़कवान पर लानत भेज और उसय्या पर जिन्हों ने अल्लाह और उस के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ना-फ़रमानी की। ग़िफ़ार क़बीले की अल्लाह तआला मग़फ़िरत फ़रमाए और अस्लम क़बीले को अल्लाह सलामत रखे।

(सही मुस्लिम किताब अल् मसाजिद .. हदीस 1557)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो रजीअ और बिर्रे मऊना के सानेहा की ख़बरों की आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सूचना मिलने का तज़किरा करते हुए कहते हैं।

"इस ख़बर के आने की तारीख़ से लेकर बराबर तीस दिन तक आप सल्लल्ला-हो अलैहि वसल्लम ने प्रतिदिन सुबह की नमाज़ के क़ियाम में निहायत दर्द के साथ क़बायल रिह्ल और ज़कवान और उसय्या और बनू लह्यान का नाम ले-ले कर ख़ुदा तआला के हुज़ूर ये दुआ की : हे मेरे आक़ा तू हमारी हालत पर रहम फ़र्मा और दुश्मनाँ-ए-इस्लाम के हाथ को रोक जो तेरे दीन को मिटाने के लिए इस बेरहमी और संगदिली के साथ बेगुनाह मुस्लमानों का ख़ून बहा रहे हैं।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु पृष्ठ 521)

यह सरिया बिर्रे मऊना का वाक़िया है जैसा कि मैं हमेशा पड़ितों के लिए तहरीक करता हूँ फ़लस्तीन के पीड़ितों के लिए दुआएं जारी रखें।

अल्लाह तआला ज़ालिमों की पकड़ के जल्द सामान पैदा फ़रमाए।

मासूमों को भी इसी तरह क़तल किया जा रहा है जिस तरह उन लोगों को, सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो को क़तल किया गया और धोखे से कभी एक जगह भेजा जाता है, कभी दूसरी जगह और फिर वहां बमबारी की जाती है। अल्लाह तआला रहम फ़रमाए।

दुनिया की उमूमी हालत के लिए भी दुआ करें।

बड़ी तेज़ी से दुनिया तबाही की ओर जा रही है और जंग के आसार बढ़ते चले जा रहे हैं। अल्लाह तआला अहमदियों को जंग के बुरे प्रभावों से और इसके षड्यंत्र से सुरक्षित रखे।

पाकिस्तानी अहमदियों के लिए भी विशेषतः दुआ करें।

आजकल फिर उनके लिए मुश्किलात बढ़ रही हैं। अल्लाह तआला रहम फ़रमाए और उनको भी ज़ालिमों से निजात दिलाए।

★ ★ ★

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

एडिशनल नाज़िर इस्लाह व इरशाद नूरुल इस्लाम के अंतर्गत नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web.www.alislam.org
www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.

चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad